RNI NO. RAJHIN/2013/57419

राजस्थान का सर्वाधिक ई-पेपर दैनिक

द पुलिस पोस्ट

आंदोलन नही अखबार

जयपुर
शुक्रवार
18/अक्टूबर/2024

वर्ष: 10: अंक: 180

जयपुर, जैसलमेर, भीलवाड़ा से प्रसारित

दूरभाष: 01482: 433184: पृष्ठ: 08: मूल्य: 1.50 रुपए

भजनलाल सरकार मिलावटखोरों के खिलाफ सख्त

1122 लीटर सरसों तेल सीज

द पुलिस पोस्ट

जयपुर(कास.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल वंद्य चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देश पर प्रदेश में आमजन को शुद्ध खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाने के लिए 'शुद्ध आहार मिलावट पर वार' अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत गुरूवार को खाद्य सुरक्षा आयुक्त इकबाल खान ने निर्देशन में सरसों तेल का कारोबार करने वाली फर्म पर कार्रवाई की गई। अतिरिक्त आयुक्त पंकज ओझा व संयुक्त आयुक्त डॉ. एसएन धौलपुरिया के सुपरविजन में जयपुर स्थित कूकरखेड़ा अनाज मंडी में मैसर्स एमके ट्रेडर्स पर केंद्रीय दल के खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की ओर से कार्रवाई की गई। मौके से मिलावट के शक के आधार पर मेजर ब्राण्ड सरसों तेल का नमूना लेकर 1122 लीटर सरसों तेल सीड़ किया गया। इसके अलावा मंडी स्थित मैसर्स शिव ट्रेडिंग कम्पनी के यहाँ से घी का नमूना लिया गया। नमूनों की रिपोर्ट के आधार पर नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। दीपावली के त्योहार के तहत मिलावट की रोकथाम के लिए संचालित विशेष अभियान के तहत अब तक लगभग 185 लीटर खाद्य तेल, 1100 किलो मसाले और 7550 लीटर घी, 6300 किलोग्राम शक्कर सीज की जा चुकी है। इस प्रकार 15200 किलोग्राम दूषित सामग्री पिछले चार-पांच दिनों में सीज की जा चुकी है। साथ ही लगभग 200 लीटर दूषित खाद्य तेल, 630 किलोग्राम पनीर और 1900 किलोग्राम विभिन्न प्रकार की मिठाइयां, 300 लीटर दूध, 412 किलोग्राम ड्राई फ्रूट 100 किलोग्राम मिल्क केक, 500 किलो मावा, 120 किलो चासनी, 10 किलो लड्डू, 68 किलो रसगुल्ला, 125 किलो नमक, 38 किलो तेल, 260 किलो दूषित सोहनपपड़ी, 25 किलो खराब सब्जियां आदि इस अभियान के दौरान नष्ट कराये जा चुके हैं।

न्यूज इनबॉक्स

राजस्थान की 2 खिलाड़ियों का नेटबॉल एशियन चैंपियनशिप में चयन

द पुलिस पोस्ट

जयपुर(कास.)। राजस्थान की दो बेटियों का नेटबॉल एशियन चैंपियनशिप के लिए चयन हुआ है। इसके साथ ही टेक्निकल कमेटी की सदस्य के रूप में प्रदेश की एक महिला का चयन हुआ है। 13वीं एशियन नेटबॉल चैंपियनशिप बेंगलुरु के कोरमंगला स्टेडियम में आयोजित होगी। प्रतियोगिता 18 से 27 अक्टूबर तक आयोजित होगी। इसके लिए राजस्थान से नेटबॉल की महिला खिलाड़ी पूजा चोपड़ा और लक्ष्मी कंवर का सलेक्शन हुआ है। साथ ही टेक्निकल कमेटी मेम्बर के रूप में निधि शर्मा का भी चयन किया गया है। इससे पहले 41वीं राष्ट्रीय नेटबॉल चैंपियनशिप हरियाणा में आयोजित हुई थी, जिसमें राजस्थान की टीम ने रजत पदक जीता था। उस प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर पूजा चोपड़ा और लक्ष्मी कंवर ने राष्ट्रीय टीम में स्थान हासिल किया है।

भारतीय क्रिकेट टीम 46 रन पर ऑल आउट

नई दिल्ली(एंजेसी)। भारतीय टीम का न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में प्रदर्शन लचर रहा। रोहित शर्मा के नेतृत्व वाली भारतीय टीम बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम पर पहली पारी में केवल 46 रन पर ऑलआउट हो गई। टीम इंडिया को टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का अपना फैसला भारी पड़ गया। बता दें कि भारत और न्यूजीलैंड के बीच पहले टेस्ट के पहले दिन का खेल बारिश के कारण रद्द हो गया था। इसके बाद दूसरे दिन रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी, लेकिन न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाजों के सामने मेजबान बैटर्स ने घुटने टेक दिए। बता दें कि भारतीय टीम के पांच बल्लेबाज तो खाता नहीं खोल सके। विराट कोहली, केएल राहुल, सरफराज खान, रविचंद्रन अश्विन और रवींद्र जडेजा शून्य पर आउट होकर पवेलियन लौटे। ऋषभ पंत (20) और यशस्वी जायसवाल ही दो ऐसे बल्लेबाज रहे, जिन्होंने दहाई संख्या में रन बनाए। इस तरह भारतीय टीम 46 रन पर ऑलआउट हुई जो घरेलू जमीन पर उसका सबसे छोटा टेस्ट स्कोर रहा।

राइजिंग राजस्थान : जयपुर में 457 करोड़ के निवेश करार, एक हजार रोजगार अवसरों का सृजन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास.)। राइजिंग राजस्थान में जयपुर जिला अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाएगा। जयपुर, जयपुर ग्रामीण व दूदू जिलों की जिला स्तरीय इन्वेस्टर्स मीट का आयोजन 8 नवंबर 2024 को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर, जयपुर में किया जाएगा। मीट के सफल आयोजन के लिए संपूर्ण जिले के उद्यमियों से संपर्क किया जा रहा है। इसी कड़ी में गुरुवार को अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट आशीष कुमार की अध्यक्षता में औद्योगिक क्षेत्र मालवीया स्थित रीको गेस्ट हाउस में औद्योगिक क्षेत्र मालवीया, मानसरोवर, अपैरल पार्क, हीरावाला एवं पीएचडी चौम्बर के पदाधिकारियों व सदस्य के साथ जयपुर में निवेश के संबंध में चर्चा की गई। रीको की ओर से स्थापित औद्योगिक क्षेत्रों में इकाईयां स्थापित करने के रूझान के साथ उद्यमियों की ओर से अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट व रीको के अधिकारियों की उपस्थिति में लगभग 457 करोड़ का निवेश किए जाने के एमओयू हस्ताक्षरित किए गए जिनकी ओर से 2 वर्ष के अन्दर इकाई स्थापित कर लगभग 1000 व्यक्तियों को रोजगार प्रस्तावित किया गया है। बैठक में औद्योगिक क्षेत्र मालवीया एसोसिएशन के अध्यक्ष महावीर अग्रवाल, सचिव हीरालाल राजावत, मानसरोवर औद्योगिक क्षेत्र के महासचिव अभय गुप्ता, सदस्य दिलीप तवर, औद्योगिक क्षेत्र हीरावाला के महासचिव रिंकू अग्रवाल व पीएचडी चैम्बर के प्रतिनिधि राकेश कुमार गुप्ता के साथ-साथ लगभग 30-35 उद्यमियों ने भाग लिया। रीको इकाई कार्यालय जयपुर (दक्षिण) के अर्न्तगत आने वाले औद्योगिक क्षेत्रों के पदाधिकारियों की ओर से अवगत करवाया गया है कि वर्तमान में औद्योगिक क्षेत्रों में लगभग 1200 की इकाईयां कार्यरत हैं जिसमें औद्योगिक क्षेत्र मानसरोवर व अपैरल पार्क में लगभग 300 इकाईया मुख्यतः गारमेन्ट से संबंधित हैं। इनकी ओर से लगभग 2000 करोड़ का व्यापार प्रतिवर्ष किया जा रहा है, जिसमें प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 25 हजार व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध हो रहा है। औद्योगिक क्षेत्रों में स्थापित अन्य इकाईयों की ओर से लगभग 1500 करोड़ का व्यापार किया जा रहा है।

इण्डिया सीएसआर एण्ड ईएसजी समिट में की शिरकत

कॉर्पोरेट जगत बने राष्ट्र विकास के संवाहक : बागड़े

जयपुर टाइम्स

जयपुर(एंजेसी)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि कॉर्पोरेट जगत सामाजिक दायित्व समझते हुए राष्ट्र के सतत विकास के संवाहक बनें। उन्होंने कहा कि समाज से जितना लाभ लिया जाए, उसे नैतिक मूल्य रखते हुए सभी लौटाएं भी ताकि सामाजिक समरसता और संतुलन बना रहे। बागडे ने गुरूवार को नई दिल्ली में आयोजित "इण्डिया सीएसआर एण्ड ईएसजी समिट 2024' को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि "विकसित भारत 2047' का लक्ष्य देश को आर्थिक महाशक्ति ही नहीं बनाना है बल्कि राष्ट्र को सामाजिक रूप में भी सशक्त कर सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करना है। उन्होंने औद्योगिक संगठनों, निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के अंतर्गत समाज में सभी क्षेत्रों में विकास और अच्छी कार्यदिशाओं के साथ खुशहाली बढ़ाने की दिशा में कार्य किए जाने पर जोर दिया। राज्यपाल ने सीएसआर के तहत प्राकृतिक खेती में भी सहयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसानों को देशी बीज, रसायन रहित खेती के लिए प्रशिक्षण और कम पानी में अधिक पैदावार के लिए प्रशिक्षण दिए जाने पर भी सीएसआर के तहत कार्य हो। इससे पहले राज्यपाल बागडे ने इंडिया सीएसआर आउटलुक रिपोर्ट 2024 का लोकार्पण और वहीं आयोजित प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया।

राइजिंग राजस्थान से प्रदेश में सस्ती होगी बिजली : नागर

द पुलिस पोस्ट

जयपुर(कास.)। राजस्थान में बिजली हमेशा से एक गंभीर मुद्दा का विषय रहा है। ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने गुरूवार को कोटा में राज्य सरकार की उपलब्धियों को गिनाया है। इस दौरान उन्होंने बिजली व्यवस्था से लेकर ऊर्जा विभाग की ओर से किए जा रहे कामों को भी बताया। साथ ही आने वाले सालों में किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध कराने जनता को सस्ती बिजली उपलब्ध कराने सहित कई बड़ी बातों का जिक्र किया।

सबसे सस्ती बिजली देने का प्रयास

नागर ने बताया कि राइजिंग राजस्थान में भी सबसे ज्यादा निवेश ऊर्जा के क्षेत्र में होगा और अब तक 5 लाख करोड़ के एमओयू होने की संभावना है। हमारा प्रयास है कि बिजली उत्पादन ज्यादा से ज्यादा किया जाए, जिससे जनता को जनता को सस्ती बिजली उपलब्ध हो। सस्ती बिजली के लिए बैंकिंग की जगह टेंडर प्रक्रिया की गई है, इससे लागत में भी कमी आएगी। उन्होंने यह भी दावा किया कि आगामी दिनों में जनता को सस्ती बिजली उपलब्ध कराने का प्रयास राज्य सरकार का रहेगा और दामों में भी बढ़ोतरी नहीं की जाएगी। बिजली उत्पादन के लिए सोलर प्लांट स्थापित करने सहित अन्य योजनाओं को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

बिजली उत्पादन पर जोर दे रही सरकार

नागर ने तत्कालीन गहलोत सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा ने जब सरकार संभाली तो तीनों बिजली कंपनी पर 1 लाख 39000 करोड़ का कर्ज था। कांग्रेस सरकार ने अपने कार्यकाल में सिर्फ बिजली खरीदने और घोटाले पर ध्यान दिया और कर्ज का भार जनता से वसूलते रहे। बिजली बैंकिंग के माध्यम से जनता पर अतिरिक्त बोझ डालने का काम भी उनकी सरकार में हुआ। लेकिन राज्य की भाजपा सरकार अब नए संयंत्र लगाने राज्य में नई तकनीक से बिजली उत्पादन पर जोर दे रही है।

शेख हसीना की बढ़ी मुश्किलें : गिरफ्तारी वारंट जारी

द पुलिस पोस्ट

नई दिल्ली(एंजेसी)। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की मुश्किलें बढ़ गई हैं। दरअसल, बांग्लादेश की एक अदालत ने उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। अदालत ने 18 नवंबर तक शेख हसीना को पेश होने का आदेश दिया है। बांग्लादेश के अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण के मुख्य अभियोजक मोहम्मद तजुल इस्लाम ने इस बात की जानकारी साझा की। शेख हसीना के खिलाफ बांग्लादेश में मानवाधिकार हनन से जुड़े कई मामलों की जांच चल रही है। उन पर छात्र आंदोलन के दौरान जान गंवाने वाले कई छात्रों की हत्या का भी आरोप है।

बांग्लादेश में उठ चुकी प्रत्यर्पण की मांग

बांग्लादेश में कई बार शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग उठ चुकी है। इस मामले में भारत के सामने कूटनीतिक संकट भी खड़ा हो गया है। माना जा रहा है कि शेख हसीना की वजह से दोनों देशों के बीच संबंधों पर भी असर पड़ सकता है। दरअसल, भारत और बांग्लादेश के मध्य एक प्रत्यर्पण संधि 2013 में हुई थी। अब सवाल उठता है कि अगर बांग्लादेश की अंतरिम सरकार शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग करती है तो क्या भारत उसके अनुरोध को स्वीकार करेगा? भारत और बांग्लादेश के मध्य हुई प्रत्यर्पण संधि के मुताबिक सीमा पर उग्रवाद, आतंकवाद व राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा पैदा करने वाले अपराधियों को किसी भी देश के अनुरोध पर वापस भेजा जाएगा। खास बात यह है कि व्यक्ति पर लगे आरोप दोनों ही देशों में दंडनीय अपराध के तहत वर्गीकृत होने चाहिए।

शेख हसीना पर नरसंहार, हत्या समेत कई गंभीर आरोप लगे हैं। 2016 के संशोधन के मुताबिक प्रत्यर्पण के लिए सुबूतों की जरूरत को भी खत्म कर दिया गया है।अब अगर किसी भी देश की अदालत ने गिरफ्तारी वारंट जारी किया है तो प्रत्यर्पण करना होगा। हालांकि संधि के अनुच्छेद 6 के मुताबिक अगर अपराध राजनीति प्रकृति का है तो प्रत्यर्पण से इनकार किया जा सकता है। इसके अलावा सैन्य अपराध से जुड़े मामलों में भी प्रत्यर्पण से मना किया जा सकता है। इसी साल जुलाई महीने में बांग्लादेश में आरक्षण के खिलाफ राष्ट्रव्यापी छात्र आंदोलन हुआ था। एक महीने तक चले आंदोलन में 400 से अधिक लोगों की जान गई थी। इसके बाद उग्र छात्रों ने राजधानी ढाका की तरफ कूच किया था। पांच अगस्त को सुरक्षा कारणों के चलते शेख हसीना ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था और सेना के हेलीकॉप्टर से भारत आ गई थीं।

मुंबई जाने वाली दो अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को बम की धमकी

द पुलिस पोस्ट

नई दिल्ली(एंजेसी)। मुंबई से लंदन जाने वाली एअर इंडिया की फ्लाइट में यात्रियों को इमरजेंसी अलर्ट का मैसेज दिया गया। यह मैसेज लैंडिंग नहीं होने की वजह सर्कुलेट किया गया। हालांकि, लैंडिंग क्यों नहीं हो रही, इसका कोई कारण अभी तक पता नहीं चला है। एअर इंडिया की फ्लाइट एआई 129 7700 ब्रिटेन की राजधानी लंदन में चक्कर लगी रही है। आपातकालीन सिग्नल फ्लाइट ट्रैकर फ्लाइटरडार24 ने गुरुवार को बताया कि मुंबई से लंदन जा रही एयर इंडिया की फ्लाइट ने ब्रिटेन की राजधानी के ऊपर से आपातकालीन सिग्नल भेजा है। हालांकि, आपातकालीन सिग्नल भेजे जाने का कारण पता नहीं चल पाया है।

हरियाणा में ' नायाब' मंत्रीमंडल ने ली शपथ, मोदी, शाह रहे मौजूद

द पुलिस पोस्ट

चंडीगढ(एंजेसी)। हरियाणा में तीसरी बार भाजपा की सरकार बन गई है। पंचकूला में आयोजित समारोह में सीएम नायब सैनी के साथ 13 मंत्रियों ने भी पद की शपथ ली। इस दौरान पीएम नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, हरियाणा विधानसभा चुनाव प्रभारी और राजस्थान भाजपा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया भी मौजूद रहे।

यह है हरियाणा का नायाब मंत्रीमंडल

अनिल विज : 71 वर्षीय अनिल विज अंबाला कैंट से सातवीं बार विधायक बने हैं। वे अनुभवी और जुझारू नेता माने जाते हैं। उनकी राजनीति की शुरुआत अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से हुई, जब वे एसडी कॉलेज में पढ़ाई कर रहे थे। इसके बाद वे 1970 में एबीवीपी के महासचिव बने और 1974 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में नौकरी ज्वाइन की।

राव नरबीर सिंह : हरियाणा के सबसे बड़े विधानसभा क्षेत्र बादशाहपुर के विधायक राव नरबीर सिंह को नायब सैनी सरकार में मंत्री बनाया गया है। भाजपा के दिग्गज नेता व पूर्व मंत्री राव नरबीर पहली बार साल 2014 में बादशाहपुर से जीते थे और मनोहर सरकार में मंत्री बने थे।

कृष्णलाल पंवार : इसराना के विधायक पंवार थर्मल की नौकरी छोड़कर राजनीति में उतरे थे। पंवार पिछली मनोहर सरकार में परिवहन मंत्री थे। 2019 में चुनाव हारने के बाद भाजपा ने राज्यसभा सांसद बनाया। 12 साल की नौकरी के बाद उन्होंने 1991 में पानीपत थर्मल पावर प्लांट में नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। ओमप्रकाश चौटाला के नेतृत्व में 1991 का चुनाव असंध से लड़ा और पहली बार विधायक बने।

महीपाल ढांडा : हरियाणा की नायब सैनी सरकार 2.0 में पानीपत ग्रामीण के विधायक महिपाल ढांडा को भी मंत्री पद दिया गया है। ढांडा पानीपत ग्रामीण विधानसभा में 2014 में भाजपा के टिकट पर पहली बार विधायक बने। उन्होंने 62074 वोट लेकर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 36132 वोटों से हराया।

विपुल गोयल : फरीदाबाद के विधायक विपुल गोयल बड़े व्यापारी और उद्यमी हैं। वर्ष 2014 में उन्हें भारतीय जनता पार्टी का टिकट मिला और वे 44781 हजार मतों से विजयी रहे। 22 जुलाई 2016 में मनोहर लाल सरकार में कैबिनेट मंत्री का पद दिया गया। इस दौरान उन्हें उद्योग और वाणिज्य के साथ अन्य विभागों का चार्ज दिया गया। 2019 में विपुल गोयल की जगह भाजपा से फरीदाबाद में नरेंद्र गुप्ता को टिकट दी गई। जनवरी 2024 को उन्हें भाजपा का प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया गया।

डॉ. अरविंद शर्मा : सोनीपत के गोहाना विधानसभा क्षेत्र में भाजपा को पहली बार जीत दिलाने वाले डॉ. अरविंद शर्मा को मंत्रीमंडल में पद दिया गया है। डॉ. अरविंद शर्मा पहले केंद्रीय राजनीति में सक्रिय थे। डॉ. अरविंद शर्मा का राजनीतिक सफर 1996 में सोनीपत लोकसभा सीट से निर्दलीय चुनाव जीतने के साथ शुरू हुआ था। इसके बाद वे इंडियन नेशनल कांग्रेस में शामिल हो गए और करनाल से 2004 और 2009 में सांसद चुने गए।

श्याम सिंह राणा : रादौर से भाजपा विधायक श्याम सिंह राणा को नायब सैनी सरकार में मंत्री पद मिला। श्याम सिंह राणा ने दूसरी बार रादौर विधानसभा सीट से जीत दर्ज कर भाजपा को मजबूत किया है। श्याम सिंह राणा ने 2024 के विधानसभा चुनावों में 13,132 वोटों के अंतर से जीत दर्ज की। इससे पहले 2014 में भी वे विधायक चुने गए थे और हरियाणा सरकार में मुख्य संसदीय सचिव की भूमिका निभाई थी।

रणबीर गंगवा : हिसार के बरवाला विधानसभा क्षेत्र से विधायक बनकर चंडीगढ़ पहुंचे रणबीर गंगवा ने 34 साल के राजनीतिक सफर में जमीन से उठकर मंत्री पद तक का सफर तय किया है। रणबीर गंगवा ने 1990 में महज 26 साल की उम्र में अपने गांव में पंच का चुनाव लड़ा था, जिसे जीतकर उन्होंने राजनीतिक पारी की शुरुआत की। इसके बाद 2000 में उन्होंने जिला परिषद का चुनाव लड़ा, जिसमें उन्हें हार का सामना करना पड़ा। लेकिन 2005 में उन्होंने फिर से जिला परिषद का चुनाव जीतकर वाइस चेयरमैन का पद हासिल किया।

कृष्ण बेदी : भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता कृष्ण कुमार बेदी नरवाना विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के विधायक हैं। इससे पहले मनोहरलाल सरकार में भी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। 57 वर्षीय कृष्ण कुमार बेदी पिछले 20 वर्षों से भाजपा से जुड़े हुए हैं। 2014 में कुरुक्षेत्र के शाहाबाद विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुने गए थे।

श्रुति चौधरी : श्रुति चौधरी 2024 के विधानसभा चुनावों में पहली बार तोशाम की विधायक बनीं हैं। जून 2024 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता हासिल की थी। इससे पहले वह 2005 से राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य रही हैं। कांग्रेस में रहते हुए उन्होंने 2009 से 2014 तक भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा संसदीय क्षेत्र से सांसद चुना गया था। श्रुति चौधरी का जन्म तीन अक्तूबर 1975 को नई दिल्ली में हुआ था। उनके पिता पूर्व कृषिमंत्री चौ सुरेंद्र सिंह और माता भाजपा से राज्यसभा सांसद किरण चौधरी हैं।

आरती राव : नारनौल के अटेली विधान सभा क्षेत्र से नवनिर्वाचित विधायक आरती राव राजनीतिक पृष्ठभूमि से जुड़ी हैं। नव निर्वाचित विधायक आरती राव अंतरराष्ट्रीय शूटिंग खिलाड़ी रही है। आरती राव ने 2001 तथा 2012 में शूटिंग वर्ल्ड कप में भाग लिया तथा चार बार एशियन चैंपियन में मेडल जीते। आरती ने 2017 में खेलों से संन्यास ले लिया और उसके बाद से राजनीति में रुचि ले रही हैं। हरियाणा विधान सभा चुनाव 2024 में आरती राव ने अटेली विधान सभा से पहली बार चुनाव लड़ा और एक कड़े मुकाबले में बहुजन समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी ठाकुर अतरलाल को 3000 मतों से शिकस्त देकर विधायक चुनी गई हैं।

राजेश नागर : हरियाणा की नायब सैनी सरकार में तिगांव के विधायक राजेश नागर भी शामिल हैं। मूल रूप से तिगांव के रहने वाले नागर वर्तमान में भतौला में रहते हैं। राजेश नागर गुर्जर समाज से आते हैं। जिले की सबसे बड़ी तिगांव विधानसभा में गुर्जर जाति के बड़ी संख्या में मतदाता है। इसके चलते उन्हें यहां से भाजपा ने 2019 में टिकट दिया।

गौरव गौतम : नायब सिंह सैनी सरकार में 36 साल के गौरव गौतम सबसे युवा मंत्री हैं। गौतम पलवल से विधायक हैं।

नागिन ने परिवार के 5 लोगों को डसकर बदला लिया?

बाप-बेटे की हुई थी मौत; 3 दिन बाद सांप के वापस लौटने से शक गहराया, जानिए- सच

जयपुर करौली के मांची गांव में 3 दिन में 6 लोगों को सांप ने डस लिया। इनमें 5 एक ही परिवार के थे। पिता-पुत्र की मौत हो गई, जबकि अन्य 4 लोगों का अस्पताल में इलाज चल रहा है।

लगातार सांप डसने के मामले सामने आने के बाद गांव में दहशत फैल गई। ग्रामीणों ने सांप को ढूंढ कर मार डाला।

मामले को लेकर कई तरह की बातें कही जा रही हैं

सांप एक परिवार से बदला लेने के लिए बार-बार आ रहा है।

नाग-नागिन के जोड़े में नाग की मौत हो गई। मारने वाले की फोटो नागिन की आंखों में छप गई। वही बदला ले रही है।

सांप की याद्दाश्त बहुत तेज होती है, वो अपना बदला कभी नहीं भूलता।

14 अक्टूबर : 'पुष्पेंद्र सिंह (32) और उनका बेटा गर्वित (4) कमरे में सो रहे थे। देर रात दोनों को सांप ने डस लिया। परिजन देवी सिंह ने बताया कि हम उन्हें अस्पताल लेकर पहुंचे। गर्वित को जयपुर रेफर कर दिया। रास्ते में उसने दम तोड़ दिया। पुष्पेंद्र की भी करौली अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई।

16 अक्टूबर : देवी सिंह के छोटे भाई बाबू सिंह, उनका बेटा दीपेंद्र (18) और भतीजा नागेंद्र (31) एक ही कमरे में सो रहे थे। सुबह करीब पौने चार बजे बाबू सिंह को शरीर पर कुछ रेंगता हुआ महसूस हुआ। उन्होंने लाइट जलाई तो सांप दिखा। उन्होंने शोर मचाते हुए सांप को बाहर निकाल कर फेंका।

16 अक्टूबर को ही सांप ने बाबू सिंह के परिवार के दीपेंद्र को और पड़ोस में रहने वाली महिला अंकिता (30) को भी डसा। करौली अस्पताल के पीएमओ डॉ. रामकेश मीणा ने बताया कि राहत की बात रही कि जहर का असर कम था। इसी तरह गांव के बाबू सिंह भर्ती हुए, लेकिन उनके शरीर पर डसने के निशान नहीं मिले।

घटनाओं के पीछे किस प्रजाति का सांप था? घटना के बाद सांप को पकड़ने के लिए रवि मीणा पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि डसने वाला सांप कॉमन करेत के नाम से जाना जाता है। ये सांप बहुत ही जहरीला होता है। इसे साइलेंट किलर भी कहते हैं। सोते हुए व्यक्ति के पास पहुंच जाता है। जैसे ही व्यक्ति कर-वट लेता है या कोई और हरकत करता है तो डस लेता है। इसके दांत इतने बारीक होते हैं कि लोगों को डसने का अंदाजा ही नहीं लग पाता। उनकी सोते-सोते ही मौत हो जाती है। 14 और 17 अक्टूबर की घटना के पीछे भी कॉमन करेत था, लेकिन उसने इतनी तेज दांत नहीं गड़ाए थे कि डसने वाले के शरीर में जहर पूरा पहुंच जाए।

क्या नुकसान पहुंचाने वाले व्यक्ति का चेहरा सांप की याद्दाश्त में रह जाता है?

इंसानों और जानवरों की तरह सांपों में भी दिमाग होता है, लेकिन बहुत बेसिक। तकनीकी तौर पर कहा जाए तो सांप का दिमाग उसके शरीर का केवल 1 प्रतिशत हिस्सा (भार या वजन) है। सांप कुत्ते-बिल्ली जैसे जानवरों की तरह इशारे नहीं समझ सकता। हालांकि सांप खतरा भांप सकता है। बचाव के लिए आक्रमण कर सकता है। नर सांप मादा को और मादा नर को पहचान सकती है। । कुछ पलों के बाद संबंधित घटना उसे याद नहीं रह सकती। ऐसे में ये भी तय है कि सांप खुद को नुकसान पहुंचाने वाले की चेहरा याद नहीं रख सकता।

सांप बार-बार एक ही घर में आकर क्यों डस रहा है?

इसे इस तरह समझ सकते हैं कि सांप किसी जगह से निकलता है मार्किंग के लिए अपनी गंध छोड़ता जाता है। सांप अपनी जीभ के जरिए गंध को सूंघ सकते हैं। सांपों की सूंघने की क्षमता इंसान से हजारों गुना अधिक होती है। नर और मादा सांप मेटिंग के लिए गंध के जरिए ही एक दूसरे के नजदीक आते हैं। घर में सांप आने से यदि उसे मार दिया जाता है तो उसका मल-मूत्र या गंध संबंधित घर में रह जाती है। गंध इतनी सूक्ष्म स्तर (माइक्रो) की होती है कि फिनाइल-डिटॉल से धोने पर भी कुछ दिन तक नहीं जाती। सांप एक दूसरे की गंध पा कर पीछा करते हैं। ऐसे में सांप उस घर तक पहुंच जाते हैं, जहां कुछ दिन पहले सांप आ चुका होता है। यदि कुछ दिन पहले उस घर में किसी सांप को मारा हो तो फिर अफवाह फैल जाती है सांप का बदला लेने के लिए उसका जोड़ीदार आया है। जबकि वह पुराने सांप की गंध से आकर्षित होकर संबंधित घर में पहुंचता है।

क्या सांप देख और सुन सकते हैं?

सांप इंसानों या अन्य जानवरों की तुलना में बहुत दूर तक नहीं देख पाते। कुछ सांप साफ देखते हैं तो कुछ धुंधला देख पाते हैं। सांपों के इंसानों और अन्य जानवरों की तरह बाहरी कान नहीं होते हैं। वे अन्य जीव के चलने से धरती में होने वाले वाइब्रेशन को महसूस करते हैं। जब भी कोई बीन बजाता है तो लोगों को लगता है कि सांप बीन की धुन पर नाच रहा है। हकीकत में सांप अपने बचाव और आक्रमण के लिए फन को बीन की ओर उठाता है।

सांप काटे तो कैसे पता करें कि वह जहरीला है या नहीं?

डसने पर यदि दो डंक के निशान बनते हैं तो समझ लीजिए कि सांप जहरीला है। काटने वाले स्थान के आस-पास एक नीला घेरा भी बन जाता है। ऐसी सिचुएशन हो तो जल्द से जल्द अस्पताल पहुंचें। वहीं यदि सांप के काटने पर दो दांत के बजाय चंद्राकार के छोटे-छोटे निशान बनते हैं तो इसका मतलब कि सांप जहरीला नहीं है। लेकिन सावधानी के तहत अस्पताल जरूर जाएं। डॉक्टर की सलाह के अनुसार इलाज लें।

87 किलो गांजे के साथ 2 गिरफ्तार:

मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने दी दबिश,मकान में प्लास्टिक के कट्टों में मिला

द पुलिस पोस्ट

भीलवाड़ा। अवैध मादक पदार्थों की धर पकड़ के लिए भीलवाड़ा जिले में चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत पुर थाना पुलिस ने बड़ी कार्रवाई को अंजाम देकर एक मकान से बड़ी मात्रा में अवैध गांजा बरामद कर दो युवकों को गिरफ्तार किया है। पुर थाना प्रभारी जय सुलतान ने बताया कि भीलवाड़ा जिले में एसपी धर्मेंद्र सिंह यादव के निर्देश और एडिशनल एसपी पारसमल जैन के निर्देशन में अवैध मादक पदार्थों की धर पकड़ के लिए लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसी के तहत जिले की मुखबिर से मिली सूचना के बाद थाना क्षेत्र के कोटड़ी कस्बे में एक कार्रवाई को अंजाम देकर एक मकान से 87 किलो 320 ग्राम गांजा बरामद किया और दो युवकों को गिरफ्तार किया है। पुर थाने के एएसआई गोपाल लाल को मुखबिर से सूचना मिली थी कि कोटडी गांव में दो व्यक्ति संदिग्ध घूम रहे हैं। इस सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और इनसे पूछताछ की तो दोनों ही घबरा गए।

10 हजार की रिश्वत लेते हैड कांस्टेबल का एसीबी ट्रेप:

FIR से नाम काटने की एवज में 20 हजार की डिमांड की थी, जयपुर एसीबी की मानपुर थाने में कार्रवाई

द पुलिस पोस्ट

दौसा। जयपुर एसीबी की टीम ने दौसा जिले के मानपुर पुलिस थाने में कार्रवाई करते हुए हैड कांस्टेबल को रिश्वत लेते ट्रेप किया है। परिवादी ने शिकायत दी थी कि एफआइआर से नाम काटने की एवज में हैड कांस्टेबल अजीत सिंह 20 हजार की डिमांड कर रहा है। जिस पर एसीबी ने शिकायत का सत्यापन कर गुरुवार अपराह्न थाने के दबिश देकर ट्रेप की कार्रवाई को अंजाम दिया। जयपुर एसीबी के एएसपी पुष्पेन्द्र सिंह राठौड के नेतृत्व में टीम की कार्रवाई करते हुए हेड कांस्टेबल अजित सिंह को परिवादी से 10 हजार की रिश्वत लेते रंगे हाथों ट्रेप किया है। पुलिस थाने में अचानक पहुंची भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टीम को देख वहां मौजूद पुलिस कर्मियों में खलबली मच गई। ट्रेप की कार्रवाई के दौरान एसीबी की टीम ने पुलिस थाने में लोगों की आवाजाही को पूरी तरह बंद रखा।

'मम्मी-पापा खुश रहो' लिखकर फंदे पर झूला नीट स्टूडेंट:

बहन गेट खटखटाती रही, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला; कोटा में इस साल 13 आत्महत्याएं

द पुलिस पोस्ट

कोटा। कोटा में नीट की तैयारी कर रहे एक और स्टूडेंट ने सुसाइड कर लिया है। बुधवार देर रात हुई सुसाइड की यह घटना शहर के दादाबाड़ थाना इलाके की है। स्टूडेंट ने पीजी के कमरे में फंदा लगाया। संचालक की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव फंदे से उतारा। उत्तर प्रदेश के मिजार्पुर का रहने वाला स्टूडेंट अपनी बहन के साथ पीजी में रहकर नीट की तैयारी कर रहा था। छात्र के पास एक सुसाइड नोट भी मिला है। इसमें उसने मम्मी खुश रहो लिखा है। परिवार के आने के बाद गुरुवार को पोस्टमार्टम किया जाएगा। वहीं, कोटा में इस साल अब तक 13 सुसाइड के केस सामने आ चुके हैं।

बहन काफी देर तक आवाज लगाती रही

सीआई नरेश कुमार मीणा ने बताया कि आशुतोष चौरसिया (20) दूसरी बार कोटा में नीट की तैयारी करने आया था। उसकी बुआ की लड़की भी नीट की स्टूडेंट है। दोनों शास्त्री नगर के एक ही पीजी में रह रहे थे। बुधवार शाम को करीब 8 बजे कोचिंग से लौटी बहन ने भाई के रूम का गेट खटखटाया तो कोई जवाब नहीं मिला। इस बीच आशुतोष के मम्मी-पापा भी उसे लगातार कॉल कर रहे थे, लेकिन कोई रिस्पांस नहीं था। आशुतोष की बहन रोते हुए भाई को काफी देर तक आवाज देती रही। फिर उसने पीजी संचालक को जानकारी दी। ऑनर ने भी गेट खुलवाने की काफी कोशिश की। इसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने गेट तोड़ा तो आशुतोष पंखे पर झूलता मिला।

फंदा लगाने से पहले लिखा सुसाइड नोट

जानकारी के अनुसार आशुतोष बुधवार को भी कोचिंग गया था। दोपहर करीब 2 बजे कोचिंग से लौटने के बाद वह कमरे से बाहर नहीं निकला। उसकी बहन शाम के बैच में कोचिंग जाती थी। इसलिए रात को जब वह पीजी में वापस आई और खाना खाने के बाद भाई के कमरे में पहुंची तो पूरी घटना का खुलासा हुआ। सीआई ने बताया छात्र के पास एक सुसाइड नोट भी मिला है। इसमें उसने लिखा है मम्मी-पापा आप खुश रहो। वहीं, पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आशुतोष पढ़ने में काफी होशियार था और कोचिंग में भी उसके अच्छे नंबर आ रहे थे। हालांकि, वह न्यूरो की समस्या से ग्रसित था जिसका उसका इलाज चल रहा था। बीमारी को लेकर वह जरूर परेशान रहता था। पुलिस के अनुसार घर वालों के कोटा पहुंचने के बाद ही और ज्यादा जानकारी सामने आ सकेगी।

एंटी हैंगिंग डिवाइस नहीं था

कोटा में सुसाइड के बढ़ते मामलों के कारण सभी पीजी व हॉस्टल में कमरों में एंटी हैंगिंग डिवाइस लगाना अनिवार्य है, लेकिन आशुतोष के कमरे में ये डिवाइस नहीं था। प्रशासन की तमाम सख्ती के बाद भी पीजी संचालक एंटी हैंगिंग डिवाइस नहीं लग रहे हैं। जबकि पहले भी प्रशासन कई बार ऐसे हॉस्टल और मकान के कमरों को सीज कर चुका है

कैसे काम करती है यह डिवाइस

पंखे की लोड क्षमता 40 किलो तक होती है। इस पर 40 किलो से ज्यादा भार आने पर स्प्रिंग फैल जाती है और पंखा नीचे आ जाता है।

भारत में पहली बार दिखा 80 हजार साल पुराना धूमकेतु:

राजस्थान के बाड़मेर में 11 दिन तक ट्रैक करने के बाद मिला ये फोटो

द पुलिस पोस्ट

बाड़मेर। भारत में पहली बार 80 हजार साल पुराने धूमकेतु की एक तस्वीर सामने आई है। ये तस्वीर खास इसलिए है कि पहली बार ये कैमरे में कैद हो पाई है। खुली आंखों से देखने के लिए इसे 11 दिनों तक ट्रैक करना पड़ा। ये तस्वीर बाड़मेर के इंजीनियर भूषण गंभीर ने ली है। धूमकेतु की इस तस्वीर को क्लिक करने के लिए इन्होंने भाग्यम ऑयल फील्ड के एरिया को चुना। क्योंकि यहां खुला आसमान और कई किलोमीटर तक सुनसान एरिया है। इस धूमकेतु का नाम सी3/2023 ए3 त्सुचिनशान-एटलस है। 11 दिन तक भूषण अपनी टीम वेदरफोर्ड के साथ इस खगोलीय घटना को ऑब्जर्व कर रहे थे। आखिरकार 16 अक्टूबर की शाम 7.20 बजे भूषण गंभीर ने यह तस्वीर क्लिक की। यह धूमकेतु पृथ्वी से 70.69 करोड़ किमी की दूरी पर अपनी कक्षा में आगे बढ़ रहा है। दावा किया जाता है कि पिछले साल इसे चीन और अफ्रीका में देखा गया था।

वैज्ञानिकों का दावा: कुछ दिनों तक अपनी पूंछ के साथ आसमान में नजर आएगा

इंजीनियर भूषण खगोलीय घटनाओं की जानकारी में रुचि रखते हैं और ऐसी घटनाओं को अमूमन अपने कैमरे में कैद करते रहते हैं। आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के वरिष्ठ खगोल वैज्ञानिकों ने बताया कि धूमकेतु ए-3 के पृथ्वी के इतना नजदीक आने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन अब यह खुली आंखों से भी देखा जा सकता है। अब यह रोजाना शाम को आसमान से धीरे-धीरे ऊपर उठता हुआ नजर आएगा। अगले कुछ दिन तक लंबी पूंछ के साथ आसमान में चमक बिखेरता रहेगा।

वैज्ञानिकों ने बीते साल खोजा था धूमकेतु ए-3

वैज्ञानिकों ने बीते साल सूर्य के करीब से गुजरने वाले सी/2023 ए3 नाम के नए धूमकेतु की खोज की थी। अनुमान के मुताबिक 80,660 साल में यह सूर्य की एक परिक्रमा करता है। इसे पहली बार 22 फरवरी को दक्षिण अफ्रीका में एस्टेरॉयड टेरेस्ट्रियल-इम्पैक ट लास्ट अलर्ट सिस्टम टेलीस्कोप में देखा गया था। चीन के पर्पल माउंटेन ऑब्जर्वेटरी के खगोलविदों ने 9 जनवरी को इस धूमकेतु की स्वतंत्र रूप से खोज की थी। ये धूमकेतु शनि और बृहस्पति ग्रह के बीच है। इसे लेकर कहा जाता है कि ये शाम के समय तभी दिख पाएगा जब आसमान में सूर्य की किरणों का प्रभाव और अंधेरा मध्यम हो। अब सर्दियों के दिन शुरू हुए हैं तो दिन छोटे होने लगे हैं। इसलिए ये अक्टूबर में तारे की तरह दिखाई दे रहा है।

स्काई सफारी ऐप ट्रेकर को किया यूज

खगोलीय ऑब्जेक्ट आसमान में देखने के लिए उसकी दिशा और वक्त जानने के लिए मोबाइल ऐप स्काई सफारी सहित कुछ ट्रैकर का इस्तेमाल किया गया था। यह धूमकेतु सूर्य माला के बाहर से आकर सूर्य की परिक्रमा कर लौट जाएगा, जिसकी जगह हर एक मिनट आसमान में बदलती रहेगी।

कन्या भ्रुण हत्या रोकने हेतु जागरूकता रैली आयोजित

द पुलिस पोस्ट

भीलवाडा सेठ मुरलीधर मानसिंहका कन्या महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ के तत्वाधान में कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए पीसीपीएनडीटी एक्ट पर एक रैली का आयोजन किया गया।जागरूकता रैली को प्राचार्य डॉ सावन कुमार जांगिड़ ने रवाना किया। यह रैली महाविद्यालय से आरंभ होकर बड़ला चौराहा होते हुए पुनः महाविद्यालय पहुंची। महिला प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ सीमा गोड़ ने बताया कि रैली का मुख्य लक्ष्य पीसीपीएनडीटी एक्ट से आमजन को जागरूक करना व कन्या भ्रूण हत्या को रोकना था। जिससे समाज में लैंगिक समानता बनी रहे एवं गिरते हुए लैंगिक अनुपात को रोका जाए। महिला प्रकोष्ठ सदस्य इंका श्री वर्मा ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान की जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर महिला प्रकोष्ठ के समस्त सदस्य, महाविद्यालय के सभी संकाय सदस्य एवं लगभग 45 छात्राएं उपस्थित रही।

पूर्व महिला विधायक को भेजे अश्लील मैसेज, रेप की धमकी:

वॉट्सऐप पर लिखा- तेरा हाल भी बाबा सिद्दीकी के जैसा कर दूंगा

द पुलिस पोस्ट

जालोर। जालोर की पूर्व विधायक अमृता मेघवाल (39) को जान से मारने की धमकी के साथ वॉट्सऐप पर अश्लील मैसेज मिले हैं। मेघवाल ने इस संबंध में जयपुर पुलिस आयुक्तालय के साइबर थाने में रिपोर्ट दी है। रिपोर्ट के अनुसार उनके वॉट्सऐप पर 7487013982 नंबर से अश्लील मैसेज और एक कॉल भी आई है। उस नंबर पर वापस कॉल किया तो सामने वाला व्यक्ति गालियां देने लगा। शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी देते हुए कहा कि तेरा हाल भी बाबा सिद्दीकी के जैसा कर दूंगा। आरोपी ने पूर्व विधायक को रेप की भी धमकी दी। मामला दर्ज होने के बाद भी उस नंबर से कॉल और मैसेज आ रहे हैं।

पूर्व में भी धमकी मिली, हमले भी हुए

मेघवाल ने बताया कि उनके साथ पिछले कुछ सालों से ऐसी घटनाएं होती रही हैं। जयपुर में उन्हें पहले भी धमकाया गया था, इसे लेकर सोडाला थाने में रिपोर्ट दी थी। इसके अलावा उन पर 2021 व 2022 में 2 बार हमले भी हुए हैं। इसको लेकर जयपुर के ट्रांसपोर्ट नगर थाने में उन्होंने मामला दर्ज कराया था। हाल ही में 8 जुलाई को जालोर में उनका ससुराल पक्ष से विवाद हो गया था। इस दौरान उन्होंने अपने पूर्व पति बाबूलाल, ससुर हेमाराम, चाचा ससुर शिवलाल सोलंकी और देवर कैलाश के विरुद्ध मारपीट करने के साथ दहेज के लिए प्रताड़ित करने का मामला दर्ज कराया था।

एडवोकेट पति बाबूलाल से हो चुका है तलाक

अमृता मेघवाल की शादी जालोर जिले के नोरवा हाल रामदेव कॉलोनी निवासी एडवोकेट बाबूलाल मेघवाल पुत्र हेमाराम मेघवाल से 21 अप्रैल 2008 को हुई थी। अमृता चाणोद (पाली) की रहने वाली हैं। 21 जनवरी 2019 को दोनों के बीच इतना विवाद हुआ कि वे अलग रहने लगे। करीब 3 साल बाद पति बाबूलाल ने फैमिली कोर्ट जालोर में तलाक के लिए प्रार्थना पत्र दाखिल किया। कोर्ट ने अमृता मेघवाल को कई नोटिस भेजकर उपस्थित होने को कहा, लेकिन वे कोर्ट में उपस्थित नहीं हुईं। इस पर कोर्ट ने 4 मई 2023 को तलाक का फैसला बाबूलाल के पक्ष में दे दिया।

जिला स्तरीय जनसुनवाई एवं सतर्कता समिति की बैठक सम्पन्न

परिवादों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कर आमजन को राहत प्रदान करें- एडीएम मेहरा

जनसुनवाई में परिवादियों को मिली राहत

सतर्कता के 10 प्रकरण और जनसुनवाई के 93 परिवाद सुने

द पुलिस पोस्ट

भीलवाड़ा, राज्य सरकार के निदेशों की पालना में जनभावना के अनुरूप पारदर्शी एवं संवेदनशील वातावरण में आमजन की परिवेदनाओं, समस्याओं की सुनवाई एवं त्वरित समाधान के लिए जिला कलक्टर नमित मेहता के निदेर्शानुसार अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रशासन ओमप्रकाश मेहरा की अध्यक्षता में माह के तीसरे गुरूवार को जिला स्तरीय जनसुनवाई एवं जिला जन अभाव अभियोग सतर्कता समिति की बैठक सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग के वीसी हॉल कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित हुई। इस अवसर पर महापौर राकेश पाठक सहित जिलास्तरीय अधिकारी मौजूद रहें। इस दौरान सतर्कता समिति में दर्ज 10 प्रकरणों की सुनवाई की गई तथा जनसुनवाई में 93 परिवाद सुने और परिवादियों को राहत पहुंचाई गई। एडीएम ने बैठक में आए परिवादियों की समस्याओं को गंभीरता से सुना तथा संबंधित अधिकारियों को उनके परिवादों का त्वरित व समयबद्ध रूप से निस्तारण करने के निर्देश दिए।

इस दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर ने अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए लंबित प्रकरणों को त्वरित निस्तारण करने के लिए निर्देशित किया। अति. जिला कलक्टर ने कहा कि सभी अधिकारी न सिर्फ संख्यात्मक बल्कि गुणवत्तापूर्ण ढंग से परिवादों का संवेदनशीलता से निस्तारण कर अधिक से अधिक लोगों को राहत प्रदान करें। जनसुनवाई में गिरधरपुरा बिजोलिया निवासी बजरंगदास पिता घीसादास ने बिजली कनेक्शन में विलंब का परिवाद रखा। परिवादी ने बताया कि विद्युत कनेक्शन के लिए उसके द्वारा डिमांड राशि जमा करवा दी गई है। ठेकेदार द्वारा विद्युत कनेक्शन के लिए पैसे की मांग की जा रही है। एडीएम ने इसे गंभीरता से लेते हुए विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियंता को जांच कर आवश्यक कार्रवाई करने तथा परिवादी के विद्युत कनेक्शन करवाने के लिए निर्देशित किया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भावलास के खेल मैदान पर अतिक्रमण संबंधी परिवाद पर एडीएम ने सीमा ज्ञान कराकर आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। सतर्कता में दर्ज प्रकरण ग्रामवासी कालूखेड़ा रोड़ मांडल के अतिक्रमण हटवाने तथा रास्ता खुलवाने के परिवाद पर एडीएम ने उपखंड अधिकारी को तहलसीदार के साथ मौका विजिट कर आवश्यक कारवाई किए जाने के लिए निर्देशित किया। पुर निवासी परिवादी विजय कुमार के प्रकरण जिसमें सार्वजनिक रास्ते की भूमि पर पत्थर की अस्थाई दीवार बनाकर अतिक्रमण होने के परिवाद पर अतिक्रमण हटाने के लिए तहसीलदार को मौका विजिट करने के निर्देश दिए। जांच अधिकारी ने बताया कि राजस्व रिकार्ड के अनुसार निजी खातेदारी भूमि होने से निगम द्वारा कारवाई नहीं की जा सकती। एडीएम ने वैकल्पिक रास्ता देने संबंधी बात कहीं। बुजुर्ग महिला प्रार्थी के मारपीट संबंधी परिवाद पर एडीएम ने पुलिस विभाग के अधिकारी को जांच के माध्यम से आवश्यक कारवाई किए जाने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में सरकारी भूमि व सार्वजनिक स्थानों से स्थाई, अस्थाई तथा अवैध अतिक्रमण हटाने, सीमा ज्ञान करवाने, पट्टे जारी करने, सड़क निर्माण, पार्किंग व्यवस्था दुरुस्त किए जाने, पीएम आवास योजना का लाभ दिलाने, पत्थरगढ़ी करवाने समेत अन्य राजस्व प्रकरण प्रस्तुत किए गए, जिसके समाधान के लिए एडीएम मेहरा ने प्रकरणों की जांच कर परिवादियों को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए। बैठक में यूआईटी ओएसडी चिमन लाल मीणा, नगर निगम आयुक्त हेमाराम चौधरी, पीडब्ल्यूडी एक्सईएन नरेंद्र चौधरी सहित बिजली, पानी सहित अन्य विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी समेत उपखंड तथा ब्लॉक स्तरीय अधिकारी वीसी के माध्यम से जुड़े।

भजनलाल सरकार द्वारा श्रमिकों के कल्याण के लिए गंभीर प्रयास

मंडी श्रमिकों को योजना के तहत चिकित्सा, शिक्षा एवं विवाह हेतु आर्थिक सहायता

द पुलिस पोस्ट

महात्मा ज्योतिबा फुले मंडी श्रमिक कल्याण योजना

भीलवाड़ा, मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा श्रमिकों के कल्याण की योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिए गंभीरता से प्रयास किये जा रहे हैं। ऐसी ही एक योजना है ह्यह्यमहात्मा ज्योतिबा फुले मंडी श्रमिक कल्याण योजनाह्यह्य राज्य सरकार द्वारा योजना के माध्यम से कृषि मंडियों में काम करने वाले हम्माल, तुलारा एवं पल्लेदारों को बच्चे पैदा होने पर, बच्चों की शिक्षा एवं विवाह के लिए तथा चिकित्सा के लिए आर्थिक सहायता दी जा रही है। योजना के माध्यम से अनुज्ञप्तिधारी महिला हम्माल एवं पल्लेदारों को प्रसुति सहायता, पुरुष को पितृत्व सहायता, महिला के विवाह और पुरुष एवं महिला हम्माल और पल्लेदारों की दो पुत्रियों की सीमा तक 50 हजार रुपये प्रति विवाह सहायता दी जाती है। इसी प्रकार मेधावी छात्रों को कक्षा 10 से स्नातकोत्तर तक 2 हजार से 6 हजार तक की छात्रवृत्ति और 20 हजार रुपये तक की चिकित्सा सहायता मुहैया कराई जाती है।

मण्डियां जमा करवा रही अंशदान

प्रदेश की कृषि उपज मंडी समितियों द्वारा हम्माल, तुलारा एवं पल्लेदारी का अंशदान जमा कराना अनिवार्य है। इसके लिए मंडी समितियों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है। विशिष्ठ एवं ह्यअह्य श्रेणी की मंडियों द्वारा प्रति श्रमिक 1000 रुपये, ह्यबह्य श्रेणी की मंडियों द्वारा 500 रुपये, ह्यसह्य श्रेणी की मंडियों द्वारा 300 रुपये और ह्यदह्य श्रेणी की मंडियों द्वारा 200 रुपए प्रति श्रमिक अंशदान जमा करवाया जाता है।

लाडली के विवाह पर 50 हजार रूपए की सहायता

योजना के तहत अधिकतम दो बेटियों के विवाह के लिए प्रति बेटी के विवाह पर 50 हजार रुपए की सहायता राशि दी जाती है। सहायता के लिए आवेदक को विवाह के 90 दिन में आवेदन प्रस्तुत करना आवश्यक है।

श्रमिकों को 20 हजार रुपये की चिकित्सा सहायता

अनुज्ञप्तिधारी हम्माल एवं पल्लेदारों को कैंसर, हार्ट अटैक, लीवर, किडनी जैसी गंभीर बीमारियों से प्रसित होने पर सरकारी अस्पताल, स्वास्थ्य केंद्र, राज्य सरकार द्वारा सरकारी कर्मचारियों के लिए अधिकृत अस्पताल में भर्ती होने पर चिकित्सा सहायता के लिए अधिकतम 20 हजार रुपए की सहायता प्रदान की जाती है।

महिलाओं को 45 दिवस की प्रसूति सहायता और पुरुषों को 15 दिवस का पितृत्व संबल

योजना के तहत महिला हम्मालों एवं पल्लेदारों को अधिकतम दो प्रसूतियों पर 45 दिन की मजदूरी के समतुल्य राशि का भुगतान करके सहायता प्रदान की जाती है। इसी प्रकार पुरुष हम्माल को पितृत्व अवकाश के रूप में निर्धारित प्रचलित मजदूरी दर के अनुसार 15 दिन की मजदूरी का भुगतान किया जाता है। इसके लिए आवेदक को 3 माह के भीतर आवेदन प्रस्तुत करना होता है।

मेधावी विद्यार्थियों को कक्षा 10 से स्नातकोत्तर तक छात्रवृत्ति की सुविधा

योजना के तहत जिनके अभिभावक मंडी में अनुज्ञप्तिधारी हम्माल का पल्लेदार हैं, उनके प्रत्येक बेटे-बेटियों (अधिकतम दो बच्चों की सीमा तक) को छात्रवृत्ति प्रदान करके शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित किया जाता है। जिसमें कक्षा 10वीं में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को 3 हजार रुपये, छात्रा को 3 हजार 500 रुपये, 70 से 80 प्रतिशत अंक वाले छात्रों को 2 हजार रुपए तथा छात्रा को 2 हजार 500 रुपये की छात्रवृत्ति एकमुश्त प्रदान की है। इसी प्रकार कक्षा 12वीं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक वाले छात्र को 5 हजार रुपये, छात्रा को 6 हजार रुपए, 80 से 90 प्रतिशत अंक वाले छात्र को 4 हजार रुपए, छात्रा को 5 हजार रुपए, 70 में 80 प्रतिशत अंक वाले छात्र को 3 हजार, छात्रा को 4 हजार रुपए की छात्रवृति छात्रा 5 हजार रुपए, स्नातकोत्तर में 60 प्रतिशत से अधिक अंक आने पर छात्र को 5 हजार तथा छात्रा को 6 हजार रुपए की छात्रवृत्ति एकमुश्त देकर आर्थिक संबल प्रदान किया जाता है।

योजना के लिए पात्रता

योजना के तहत हम्मालों एवं पल्लेदारों को 18 से 60 वर्ष की आयु होने तथा राज्य का मूल निवासी होने पर सहायता दी जाती है साथ ही उनका राजस्थान कृषि उपज मंत्री समिति अधिनियम 1961 के अधीन अनुज्ञप्ति धारी होना तथा राज्य की कृषि मंडियों में निर्धारित कार्य करने की आवश्यक शर्त है। इन्हें किसी अन्य स्त्रोत से वेतन प्राप्त नहीं होने पर ही सहायता देय है।

जयपुर में घर के बाहर से स्कॉर्पियो चोरी, कार से आए थे बदमाश, मास्टर चाबी से लॉक तोड़कर ले गए गाड़ी

द पुलिस पोस्ट

जयपुर जयपुर में एक घर के बाहर खड़ी स्कॉर्पियो गाड़ी चोरी हो गई। स्कॉर्पियो चोरी करने बदमाश खुद की कार लेकर आए थे। मास्टर चाबी से लॉक तोड़कर बदमाश रात के अंधेरे में गाड़ी चोरी कर ले गए। घर के पास लगे सीसीटीवी में पूरी घटना कैद हो गई। इसमें बदमाश स्कॉर्पियो चोरी कर ले जाते दिखाई दे रहे है। मुहाना थाना पुलिस फुटेज के आधार पर स्कॉर्पियो चोरों की तलाश कर रही है। एएसआई रामचन्द्र ने बताया- महावीर नगर-ए गोल्यावास मुहाना निवासी पंकज कुमावत (25) ने स्कॉर्पियो चोरी की रिपोर्ट दर्ज करवाई है। मंगलवार रात को उन्होंने घर के बाहर रोड किनारे पार्किंग में अपनी स्कॉर्पियो गाड़ी खड़ी की थी। देर रात बदमाश मास्टर चाबी से लॉक तोड़कर स्कॉर्पियो गाड़ी चोरी कर ले गए। बुधवार सुबह करीब 5:30 बजे नींद से जागने पर घर के बाहर जाकर देखने पर स्कॉर्पियो गाड़ी गायब मिली। पुलिस कंट्रोल रुम को स्कॉर्पियो की चोरी की सूचना देकर नाकाबंदी करवाई गई।

सीसीटीवी में कैद मिली करतूत

घर के पास लगे सीसीटीवी फुटेज को चैक करने पर स्कॉर्पियो चोरों की करतूत कैद मिली। स्कॉपियो चोरी करने आए बदमाश खुद की कार लेकर आए थे। मास्टर चाबी से लॉक तोड़कर स्कॉर्पियो बदमाशों ने चोरी की। स्कॉर्पियो चोरी कर ले जाते समय अपनी कार को भी पीछे-पीछे साथ ले गए। मुहाना थाना पुलिस फुटेज के आधार पर चोरों की तलाश कर रही है।

पीड़ित महिलाओं को मिल रहीं सुविधाओं का लिया जायजा:

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव ने सखी वन स्टॉप सेंटर का किया दौरा

धौलपुर। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव ने सखी वन स्टॉप सेंटर का निरीक्षण किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष (जिला एवं सेशन न्यायाधीश) धौलपुर सतीश चंद के मार्गदर्शन में निरीक्षण के लिए पहुंची जिला सचिव ने पीड़ित महिलाओं को दी जा रही सहायता की जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान सचिव रेखा यादव ने सखी वन स्टॉप सेंटर द्वारा पीड़ित महिलाओं को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं का जायजा लेने के साथ वन स्टॉप सेंटर द्वारा संधारित रजिस्टरों का अवलोकन किया। जिला प्रभारी सचिव ने बताया कि सरकार द्वारा प्रत्येक जिले में पीड़ित महिलाओं के विधिक सहायतार्थ एवं उनकी सुरक्षा हेतु सखी वन स्टॉप सेंटर संचालित किये गए हैं। पीड़ित एवं जरूरतमंद महिलाओं को सखी सेंटर द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं का लाभ उठाना चाहिए। सखी वन स्टॉप सेंटर के अन्तर्गत सभी प्रकार की हिंसा से पीड़ित महिलाओं एवं बालिकाओं को एक ही स्थान पर अस्थाई आश्रय, पुलिस डेस्क, विधिक सहायता, चिकित्सा एवं काउंसिलिंग की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव रेखा यादव ने मौके पर मौजूद अधिकारियों और कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

न्याय की गान्धारी की आँखों से पट्टी का हटना सुखद

राकेश अचल

न्याय की देवी की वास्तव में यूनान की प्राचीन देवी हैं, जिन्हें न्याय का प्रतीक कहा जाता है. इनका नाम जस्टिया है. इनके नाम से जस्टिस शब्द बना था। इनके आंखों पर जो पट्टी बंधी रहती है, उसका मतलब है कि न्याय की देवी हमेशा निष्पक्ष होकर न्याय करेंगी। किसी को देखकर न्याय करना एक पक्ष में जा सकता है। इसलिए इन्होंने आंखों पर पट्टी बांधी थी।

कहते हैं की जो होता है सो अच्छा ही होता है। भारत में न्यायपालिका का प्रतीक चिन्ह आँखों पर पट्टी बंधे हाथ में तलवार लिए एक स्त्री का चित्र था । इसे न्याय की देवी कहा और माना जाता है ,क्योंकि न्याय देने का काम शायद देवता नहीं कर पाते हैं। न्याय की देवी की आँखों पर पट्टी शायद इसलिए बंधी गयी होगी ताकि वो नीर-क्षीर विवेक से न्याय कर सके,हाथ में तलवार शायद इसीलिए दी गयी होगी ताकि वो निर्ममता से दंड दे सके,लेकिन अब उसकी आँखों से पट्टी भी हटा दी गयी है और हाथ से तलवार भी छीन ली गयी है । न्याय की देवी के हाथों में उस संविधान की प्रति पकड़ा दी गयी है जो हाल के आम चुनाव में कांग्रेस के नेता राहुल गाँधी और बाकी का विपक्ष लेकर घूम रहा था।

कहते हैं कि न्याय के प्रतीक को बदलने की सारी कवायद के पीछे देश के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी वाई चंद्रचूड़ हैं। उनके निदेशों पर न्याय की देवी में बदलाव कर दिया गया है। न्याय कि देवी कि नयी प्रतिमा सुप्रीम कोर्ट में जजों की लाइब्रेरी में लगाई गई है। पहले जो न्याय की देवी की मूर्ति होती थी. उसमें उनकी दोनों आंखों पर पट्टी बंधी होती थी. साथ ही एक हाथ में तराजू जबकि दूसरे में सजा देने की प्रतीक तलवार होती थी। ये बदलाव हालाँकि सांकेतिक ही है लेकिन है अच्छा। इस फैसले पर मौजूदा सरकार की सोच भी परिलक्षित होती है। आपको याद होगा कि हमारी मौजूदा सरकार को आजकल सब कुछ बदलने का भूत सवार है । शहरों,स्टेशनों के नाम ही नहीं बल्कि अंग्रेजों के जमाने के तमाम कानून भी बदले गए हैं। ऐसे में न्यायपालिका क्यों पीछे रहे ? इसीलिए अब भारतीय न्यायपालिका ने भी ब्रिटिश काल को पीछे छोड़ते हुए नया रंगरूप अपनाना शुरू कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट का ना केवल प्रतीक बदला है बल्कि सालों से न्याय की देवी की आंखों पर बंधी पट्टी भी हट गई है। जाहिर है कि सुप्रीम कोर्ट ने देश को संदेश दिया है कि अब कानून अंधा नहीं ह। कानून को अंधा होना भी नहीं चाहिए ।दुर्भाग्य से देश में आज भी तमाम कानून अंधे हैं।

मुझे लगता है कि सुप्रीम कोर्ट के मुख्य नयायधीश को ये विचार या प्रेरणा पिछले दिनों गणेशोत्स्व पर प्रधानमंत्री जी के साथ गणेश पूजन के बाद मिली। शुरूआत अच्छी है।

हम सब इसका स्वागत करते है । इस समय जिस भी व्यवस्था की आँखों पर पट्टी बंधी हो उसे हटाने की जरूरत है। आँखों पर पट्टी का बंधा होना जहाँ नीर-क्षीर विवेक का प्रतीक माना जाता रहा है वहीं इसे जानबूझकर आअंखें बंद करने का प्रतीक भी माना जाता है। द्वापर में गांधारी ने अपनी आँखों पर पट्टी अपने पति प्रेम के चलते बाँधी थी ,लेकिन उसका क्या परिणाम हुआ ,पूरी दुनिया जानती है । दुनिया न भी जानती हो , लेकिन भारत का बच्चा -बच्चा जानता है। सुप्रीम कोर्ट के इस नवाचार का हम दिल खोलकर स्वागत करते हैं और चाहते हैं कि अब देश में न्यायप्रणाली की आँखें न सिर्फ खुलीं हों बल्कि गंगाजल से धुली भी हो। अभी तक भारतीय न्यायपालिका में देश का भरोसा कायम है यद्दिप न्यायपालिका तमाम आधे-अधूरे फैसलों की वजह से संदिग्ध हुई है तथापि उसे अनेक फैसलों की वजह से पूरा सम्मान भी हासिल है।

दुर्भाग्य ये है कि इस समय देश में कार्यपालिका हो या विधायिका,सभी की आँखों पार पट्टी और हाथों में तलवार है । पक्षपात की तलवार । अदावत की तलवार। हमारी सरकार के नियनत्रण में सब कुछ है । न्यायपालिका भी ,क्योंकि इस अंग की नियुक्ति,वेतन-भत्तों तक की व्यवस्था सरकार करती है। सरकार भी अपनी आँखों पर पट्टी बांधकर काम करती है । वो जिस मंजर को नहीं देखना चाहती उसे नहीं देखती । वो जहाँ तलवार चलाने की जरूरत होती है वहां तलवार को हाथ भी नहीं लगाती और जहाँ तलवार नहीं चलना होती वहां तलवार भी चलाती है और आँखों पर बंधी पट्टी भी हटा लेती है। इस बात के उदाहरण नहीं दूंगा,इसका विश्लेषण आपको भी करना चाहिए।

मुख्य न्यायाधीश माननीय चंद्रचूड़ का मानना है कि अंग्रेजी विरासत से अब आगे निकलना चाहिए। कानून कभी अंधा नहीं होता। वो सबको समान रूप से देखता है। इसलिए न्याय की देवी का स्वरूप बदला जाना चाहिए। साथ ही देवी के एक हाथ में तलवार नहीं, बल्कि संविधान होना चाहिए; जिससे समाज में ये संदेश जाए कि वो संविधान के अनुसार न्याय करती हैं। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ साहब का मानना है कि तलवार हिंसा का प्रतीक है। जबकि, अदालतें हिंसा नहीं, बल्कि संवैधानिक कानूनों के तहत इंसाफ करती हैं। दूसरे हाथ में तराजू सही है कि जो समान रूप से सबको न्याय देती है।

हमें उम्मीद करना चाहिए की जिस तरह से माननीय मुख्य नयायधीश ने अपनी सेवा निवृत्ति से कुछ दिन पहले न्यायपालिका के प्रतीक को बदला है उसी तरह वे जाते-जाते उन सभी संवैधानिक संस्थाओं की आँखों पर बंधी पट्टी और हाथों में ली गयी दृश्य और अदृश्य तलवारों को हटवाने का भी इंतजाम कर जायेंगे। ईडी हो,सीबीआई हो या केंद्रीय चुनाव आयोग हो सबकी आँखों पर पट्टी और हाथों में तलवार है । आज का युग आँखों पर पट्टी बांधकर काम करने का है भी नही। आज के युग में तलवार हाथ में लेकर दुनिया को नहीं चलाया जाता । आज कीदुनिया के हाथों में तलवार की जगह विनाशकारी बम आ गए हैं, मिसाइलें आ गयीं हैं ,जो सामूहिक नरसंहार कर रहे हैं।

हमारे कानून के शिक्षक स्वर्गीय गोविंद अग्रवाल साहब हमें पढ़ते वक्त बताया करते थे कि -न्याय की देवी की वास्तव में यूनान की प्राचीन देवी हैं, जिन्हें न्याय का प्रतीक कहा जाता है. इनका नाम जस्टिया है. इनके नाम से जस्टिस शब्द बना था। इनके आंखों पर जो पट्टी बंधी रहती है, उसका मतलब है कि न्याय की देवी हमेशा निष्पक्ष होकर न्याय करेंगी। किसी को देखकर न्याय करना एक पक्ष में जा सकता है। इसलिए इन्होंने आंखों पर पट्टी बांधी थी। वैसे आपको भी पता है और मुझे भी पता है कि आँखों पर पट्टी बांधकर मोटर साइकल चलाना और चित्र बनाना जादूगरों का काम है,न्यायधीश ये नहीं कर सकते । नेता जरूर कर सकते हैं,कर भी रहे हैं। । बहरहाल मुख्य न्यायाधीश को इस तब्दीली के लिए तहेदिल से बधाई। कम से कम सेवनिवृर्ति से पहले वे भी एक नया इतिहास लिखकर जो जाने वाले हैं। अब पुरानी हिंदी फिल्मों में दिखाए जाने वाले अदालतों के इस प्रतीक चिन्ह का क्या होग। राम जाने ?

संपादकीय

सकारात्मक पहल

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रों के हित में 'अर्न व्हाहिल लर्न' योजना शुरू कर रहा है जिसमें वे अपनी नियमित पढ़ाई के दौरान कमाई भी कर सकेंगे। विश्वविद्यालय छात्रों को विभिन्न माध्यमों मसलन इंटरर्नशिप, रिसर्च असिस्टेंटशिप आदि से कमाने का मौका देग। इसके लिए ड़ीयू का प्रत्येक विभाग उद्योग आदि की मदद से कॉर्पस फंड़ जनरेट करेगा। विभाग विभिन्न एजेंसियों के साथ करार करेगा ताकि छात्रों को इनमें इंटरर्नशिप मिल सके। पार्ट टाइम जॉब के लिए स्थानीय व्यापार संगठनों को भी जोड़ेगा। प्रिंसिपल इंटर्नशिप योजना के अंतर्गत छात्रों को मानदेय दिया जाएगा। जरूरतमंद छात्रों को टीचर असिस्टेंटशिप दिए जाने की योजना पर भी जोर रहेगा। योजना का प्रारूप निश्चित रूप से बेहद सकारात्मक प्रतीत हो रहा है। देश भर से छात्र बेहतर भविष्य की कल्पना के साथ दिविवि में दाखिला लेते हैं जिसमें ढ़ेरों मेधावी और परिश्रमी छात्र ऐसे होते हैं, जिनकी पृष्ठभूमि कमजोर वर्ग से होती है। बीते सालों में विभिन्न केंद्रीय विश्वविद्यालयों की तरह ड़ीयू ने भी विभिन्न पाठ्यक्रमों का शुल्क काफी बढ़ा दिया है। ऐसे में घर-परिवार से दूर रहकर पढ़ाई करने वालों पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। इस मंहगे महानगर में खाने और आवास की व्यवस्था कर पाना उनके लिए बेहद संघर्षपूर्ण होता है। निर्धन देशों में ही नहीं दुनिया भर के अति समृद्ध देशों में भी छात्रों के लिए ऐसी सुविधा होती है जिसमें वे पार्टटाइम काम कर-के कुछ पैसा स्वयं कमा सकते हैं। इससे न सिर्फ छात्र आर्थिक रूप से स्वावलंबी होंगे, बल्कि उन्हें मिलने वाले इस अनुभव का अतिरिक्त लाभ नौकरियां प्राप्त करने के दौरान में भी मिल सकेगा। हालांकि अपने यहां पार्टटाइम काम करने के न तो बहुत अवसर हैं, न ही प्रचलन। क्योंकि काम से ज्यादा उन्हें करने वाले मौजूद हैं, वह भी बेहद कम मेहनताने पर परंतु ये छात्र प्रशिक्षित होने के साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे होंगे, इसलिए नियोक्ता को भरपूर मदद मिल सकती है। चूंकि यह काम उन्हें विश्वविद्यालय परिसर या आसपास मिलने की सुविधा होगी तो वे पढ़ाई में अपना वक्त ज्यादा दे सकेंगे। बढ़ती बेरोजगारी और मंहगाई के मद्देनजर यह कदम छात्रों के हित में प्रतीत हो रहा है, हालांकि इससे उनकी पढ़ाई बाधित हाने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता। जितनी संख्या में छात्र हैं, उस अनुपात में जरूरतमंदों को उतना रोजगार दिलाना भी विश्वविद्यालय के लिए कम चुनौतीपूर्ण नहीं होगा।

चिंतन-मनन

दया करने वालों की जय-जयकार होती है

हर व्यक्ति अधिक से अधिक धन कमाने के पीछे व्यवहारिकता एवं मानवीय मूल्यों को भूलता जा रहा है। रास्ते में अगर कोई मजबूर व्यक्ति दिख जाए तो कोई बेबसी प्रकट करने के लिए दो पल रूक जाए यही बड़ी बात होती है। बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो किसी के लिए अपना एक पल और एक रुपए तक खर्च करने में कंजूसी करते हैं। शायद इसलिए कि उन्हें लगता है, भला पीड़ित व्यक्ति उनका क्या नाता है। लेकिन ऐसा सोचने से पहले यह शब्द जरूर याद करना चाहिए कि वसुधैव कुटुम्बकम् का मंत्र इस देश ने संसार को दिया है जिसका अर्थ है वसुधा यानी धरती पर रहने वाला हर व्यक्ति हमारा कुटुम्ब है। अगर विष्णु पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण अथवा अन्य कोई भी पुराण उठाकर देखेंगे तो पता चलेगा कि हम सभी मनुष्य मनु की संतान हैं। इस नाते हम सभी मनुष्य एक दूसरे के रिश्तेदार हैं।

इस नाते हम सभी को अपने रिश्तेदारों की सहायता करनी चाहिए यही हमारा धर्म है। धर्म ग्रंथों में कहा भी गया है कि दया धर्म का मूल है। इसलिए हर व्यक्ति को बिना किसी लालच और स्वार्थ के जरूरत के समय आगे बढ़कर लोगों की मदद करनी चाहिए। जो ऐसा करते हैं उनका जयजयकार समाज ही नहीं ईश्वर भी करता है। दया करने वाला व्यक्ति कठिन समय आने पर भी अपना गुण नहीं त्यागता है। इसी का उदाहरण है मुगल बादशाह दारा। दारा को औरंगजेब ने बंदी बना लिया। बंदी बना दारा जब शहर के बीच से गुजर रहा था तो उसकी स्थिति देखकर लोग तरस खा रहे थे लेकिन कोई मदद के लिए आगे नहीं आ रहा था। एक फकीर ने दारा की स्थिति को देखकर कहा कि, दारा तू जब भी हाथी पर बैठकर इस रास्ते जाता था तो मेरी झोली भरता था। आज क्या फकीर की झोली खाली रहेगी।

दारा ने नजर उठाकर उस फकीर की ओर देखा और अपने शरीर पर पड़ा दुशाला उठाकर फकीर की ओर फेंक दिया। दारा की बेबसी पर जो लोग सिर झुकाए खड़े थे सभी दारा की उदारता और दयालुता को देखकर जयजयकार करने लगे। दारा का झुका हुआ सिर गर्व से ऊपर उठ गया और औरंगजेब के सैनिकों का सिर शर्म से झुक गया। भले ही आप कभी तीर्थ स्थल न जाएं लेकिन जरूरत के समय लोगों की सहायता कर दें तो कई तीर्थ यात्रा का फल आपको घर बैठे मिल जाता है।

जम्मू - कश्मीर में अब्दुल्ला सरकार की राहें बड़ी कठिन

धारा 370 खत्म होने के बाद नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ले ली है, उमर अब्दुल्ला केंद्र शासित बने जम्मू-कश्मीर के पहले मुख्यमंत्री होंगे. हालांकि, उमर अब्दुल्ला के लिए राह उतनी आसान नहीं होगी, क्योंकि अनुच्छेद 370 हटने और केंद्र शासित प्रदेश बनने के बाद जम्मू-कश्मीर का पावर गेम बहुत बदल गया है.. और जम्मू - कश्मीर की राजनीति के लिए यह सबसे अहम पहलू है. उमर अब्दुल्ला पहले भी जनवरी 2009 से जनवरी 2014 तक जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री रह चुके हैं. उन्हें मुख्यमंत्री होने का तजुर्बा भी है, लेकिन तब और अब में बहुत फर्क है. उमर अब्दुल्ला को एक स्वतंत्र राज्य का सीएम होने का अनुभव है, लेकिन केंद्र शासित प्रदेश का सीएम होने का तजुर्बा नहीं है. जब उमर अब्दुल्ला मुख्यमंत्री हुआ करते थे तब जम्मू-कश्मीर पूर्ण राज्य हुआ करता था और अब ये केंद्र शासित प्रदेश है. तब जम्मू-कश्मीर विधानसभा का कार्यकाल 6 साल का था, अब बाकी राज्यों की तरह ही 5 साल होगा. तब राज्य से जुड़े फैसले लेने की सारी शक्तियां विधानसभा और मुख्यमंत्री के पास होती थीं, सारे के सारे कानून बनाने की शक्तियां सीएम के पास होती थीं, लेकिन अब काफी हद तक सारा कंट्रोल उपराज्यपाल के हाथ में होगा. और प्रमुख बात सारा का सारा कंट्रोल केंद्र सरकर के पास होगा, जो उमर अब्दुल्ला के लिए परेशानी का सबब बनने वाला है. मोदी सरकार का स्वभाव वैसे भी राज्यों में दखल देने का रहा है. जम्मू - कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देने का वायदा करने वाली मोदी सरकार ने आजतक बहाल नहीं किया है, जबकि यह निर्णय केंद्र सरकार के अधीन होता है. देखना दिलचस्प होने वाला है कि मोदी सरकार पूर्ण राज्य का दर्जा देती है या लटकाए रहती है, क्योंकि जम्मू - कश्मीर में हालात कैसे रहेंगे इस नव गठित सरकर के हाथ में भी रहने वाला है.

2019 में धारा 370 खत्म होने के बाद अब जब जम्मू-कश्मीर की स्थिति काफी बदल चुकी है, लेकिन यह भी तय है कि राजनीतिक मतभेदों के बावजूद दिल्ली में आम आदमी पार्टी सरकार और उपराज्यपाल के बीच तनातनी होती रहती है, उसी तरह की तनातनी जम्मू-कश्मीर में भी देखने को मिल सकती है. तभी तो कुछ दिन पहले दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने राजनीतिक कटाक्ष किया था अगर हाफ स्टेट में सरकार चलाने में दिक्कत आए तो उमर अब्दुल्ला मुझसे सलाह ले सकते हैं. क्योंकि अरविंद केजरीवाल पिछले दस सालों से केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं, सीएम केजरीवाल के कटाक्ष के मायने इसलिए भी हैं क्योंकि कोर्ट से कुछ शक्तियां मुख्यमंत्री को मिली थीं, लेकिन मोदी सरकार उसके विरुद्ध अध्यादेश ले आई थी. ऐसे ही 2019 के बाद जम्मू-कश्मीर की संवैधानिक संरचना भी पूरी तरह से बदल गई है और अब वहां सरकार से ज्यादा बड़ी भूमिका उपराज्यपाल की हो गई है. 2019 का कानून कहता है कि पुलिस और कानून व्यवस्था को छोड़कर जम्मू-कश्मीर विधानसभा बाकी सभी मामलों पर कानून बना सकती है. लेकिन एक पेच भी है. अगर राज्य सरकार राज्य सूची में शामिल किसी विषय पर कानून बनाती है तो उसे इस बात का ध्यान रखना होगा कि इससे केंद्रीय कानून पर कोई असर न पड़े. इसके अलावा, इस कानून में ये भी प्रावधान किया गया है कि कोई भी बिल या संशोधन विधानसभा में तब तक पेश नहीं किया जाएगा, जब तक उपराज्यपाल ने उसे मंजूरी न दे दी हो. अब जम्मू-कश्मीर में उपराज्यपाल ही एक तरह से सबकुछ है. सरकार को भले ही पुलिस और कानून व्यवस्था को छोड़कर बाकी मामलों में कानून बनाने का अधिकार है, लेकिन उसके लिए उपराज्यपाल की मंजूरी जरूरी होगी. इतना ही नहीं, उपराज्यपाल का नौकरशाही और एंटी-करप्शन ब्यूरो पर भी नियंत्रण होगा. इसका मतलब हुआ कि उपराज्यपाल सरकारी अफसरों का ट्रांसफर और पोस्टिंग उपराज्यपाल की मंजूरी से होगा. इसके अलावा, उपराज्यपाल के किसी भी काम की वैधता पर इस आधार पर सवाल नहीं उठाया जा सकता कि उन्हें ऐसा करते वक्त अपने विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए था या उन्होंने विवेक का इस्तेमाल नहीं किया था. उनके किसी फैसले को अदालत में इस आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकती कि उन्होंने फैसला लेते वक्त मंत्री परिषद की सलाह ली थी या नहीं ली थी. अतः बदल चुके जम्मू - कश्मीर के मुख्यमंत्री की राहें आसान नहीं रहने वाली..

कांग्रेस की राजनीतिक चाल ने कश्मीर की नई सरकार के लिए चिंता की लकीरें खींच दी हैं. कांग्रेस ने उमर अब्दुल्ला सरकार को समर्थन तो दिया है लेकिन समर्थन बाहर से दिया है, बाहर से समर्थन देने का मतलब है कि कांग्रेस मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं होगी. उमर अब्दुल्ला सरकार के शपथग्रहण में कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे सहित दिग्गज नेता राहुल गांधी - प्रियंका गांधी भी शामिल हुए हैं, लेकिन पार्टी ने अपने कोटे से सरकार में किसी को भी मंत्री नहीं बनवाया है. कांग्रेस से जुड़े सूत्रों के मुताबिक इसकी कई वजहें हो सकती है. जम्मू कश्मीर में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने के बावजूद कांग्रेस उमर अब्दुल्ला की सरकार में शामिल नहीं हुई है. कांग्रेस की तरफ से अब्दुल्ला कैबिनेट में कोई भी मंत्री नहीं बना है. वो भी तब, जब कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी खुद श्रीनगर जाकर सरकार के शपथग्रहण में शामिल हुए हैं.कांग्रेस के इस फैसले की अब चर्चा हो रही है कि आखिर पार्टी ने उमर कैबिनेट में अपने कोटे से मंत्री क्यों नहीं दिए? कांग्रेस सूत्रों के मुताबिक इसकी 4 बड़ी वजहें हैं- जम्मू कश्मीर के चुनावी इतिहास में पहली बार कांग्रेस का प्रदर्शन काफी खराब है. पार्टी 6 सीटों पर सिमट गई है. ऐसे में कहा जा रहा है कि कांग्रेस हाईकमान ने पार्टी के किसी विधायक को कैबिनेट में न शामिल कर स्थानीय नेताओं को जमीन पर मेहनत करने का संदेश दिया है. जम्मू कश्मीर में कांग्रेस कोटे से एक भी हिंदू विधायक नहीं जीता है. ऐसे में पार्टी के सियासी समीकरण सध नहीं रहे थे. कश्मीर का मुस्लिम वोटबैंक पीडीपी और नेशनल कॉन्फ्रेंस के पक्ष में रहा है. उमर अब्दुल्लाह और उनकी पार्टी 370 को वापस लाने के पक्ष में है. कांग्रेस

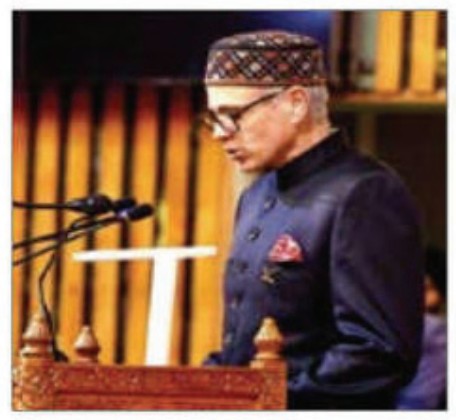

स्टेटहूड की सिर्फ मांग कर रही है. सरकार में पार्टी अगर शामिल होती तो अन्य राज्यों में उसके लिए सियासी बैकफायर कर जाता, इसलिए भी पार्टी ने सरकार में शामिल न होने का फैसला किया है नेशनल कॉन्फ्रेंस कांग्रेस के 1-2 मंत्री पद देना चाह रही थी. कांग्रेस के दिल्ली में बैठे नेता सांकेतिक भागीदारी नहीं चाहते थे. 6 विधायक जीते, इनमें 3 दिग्गज कांग्रेस की तरफ से इस बार जम्मू कश्मीर में 6 विधायकों ने जीत हासिल की है. इनमें पीरजादा मोहम्मद सईद, तारिक हामिद कर्रा, गुलाम अहमद मीर जैसे दिग्गज का नाम शामिल हैं. कर्रा घाटी में कांग्रेस के अध्यक्ष हैं. कांग्रेस ने गुलाम अहमद मीर को कांग्रेस विधायक दल का नेता चुना है.कांग्रेस ने घाटी में 37 उम्मीदवार उतारे थे, लेकिन जम्मू और चिनाब रीजन में पार्टी पूरी तरह साफ हो गई. अतः काँग्रेस रणनीति है कि इतना औसत प्रदर्शन के बावजूद नेताओं को मंत्री पद मिलना मतलब जमीन से दूर कर सकता है, इंडिया गठबंधन का धर्म निभाने के नाम पर कांग्रेस उमर अब्दुल्ला को समर्थन तो दे रही है, लेकिन सरकार में शामिल नहीं होना चाहती यह हैरान करने वाला है... बदल चुके जम्मू - कश्मीर के नए मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की राहें आसान नहीं रहने वाली हैं.

-दिलीप कुमार पाठक

बेकाबू महंगाई का सितम झेलती जनता

भारत सहित हिमाचल में इन दिनों हरी सब्जियों के दाम आसमान छू रहे हैं और महंगी सब्जियां आम लोगों की पहुंच से पार हो चुकी हैं। टमाटर के दाम ने तो सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। हिमाचल में जहां टमाटर 140 रुपए प्रति किलो तक बिक रहा है, वहीं हरा मटर 200 रुपए की दर से बिक रहा है। दूसरी सब्जियां भी 80-90 पार ही बिक रही हैं और सब्जी विक्रेताओं, आढ़तियों को कोई पूछने वाला नहीं है। आलू, प्याज, शिमला मिर्च सोने के भाव बिक रहे हैं। एक तरफ शादियों का सीजन चल रहा है, तो दूसरी तरफ त्योहारों के चलते लोगों की जेबें खूब ढीली हो रही हैं। सरकार द्वारा खाद्य पदार्थों के दामों और एमआरपी पर कोई ठोस नियंत्रण न होने के कारण एक तरफ देश में गरीबों की हालत दयनीय होती जा रही है तो वहीं अमीरों की संख्या लगातार बढ़ रही है। भारत में हाल के वर्षों में खाद्यान्नों के दाम बहुत ज्यादा बढ़ चुके हैं।

ऊपर से, देश में रोजगार की स्थिति बेहद खराब है और लोगों की कमाई भी नहीं बढ़ रही है। इसलिए आम आदमी को पूरा आर्थिक परिदृश्य ही नकारात्मक नजर आ रहा है। हिमाचल प्रदेश के बाजारों में महंगाई बेलगाम होती जा रही है। ऐसे लगता है जैसे फल एवं सब्जियों के विक्रेताओं में नियम-कायदे और कानून का कोई खौफ नहीं है और वे मनमाने दामों पर सब्जियां और फल बेचकर मोटा मुनाफा कमाने में जुटे हुए हैं। ऊपर से तुर्रा यह है कि प्रशासनिक कार्रवाई, जुमार्ने तथा दंड अथवा लाइसेंस कैंसिल होने का कोई डर न रहने के चलते शायद ही कोई सब्जी, फल विक्रेता अपनी दुकान में इनके दामों को प्रदर्शित करने वाला बोर्ड लगाने की जहमत उठाता होगा। त्योहारी सीजन के बीच में राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक खुदरा मुद्रास्फीति सितंबर में बढकर 5.49 प्रतिशत हो गई, जो पिछले महीने 3.65 प्रतिशत थी। वहीं सितंबर में थोक महंगाई बढकर 1.84 फीसदी पर पहुंच गई है। महंगाई बढ? के पीछे खाद्य एवं सब्जियों की कीमतों में वृद्धि मुख्य वजह रही। रिटेल बाजार में खाद्य पदार्थों और सब्जियों के दाम चाहे कितने भी क्यों न बढ़ जाएं, लेकिन किसान वर्ग को इसका फायदा कभी भी नहीं मिलता है। इसके विपरीत जमाखोरों, स्टोरियों द्वारा जमकर खाद्य वस्तुओं की जमाखोरी की जाती है और बाजार में वस्तुओं का कृत्रिम अभाव पैदा कर महंगाई को बढ़ाकर चोखा मुनाफा कमाया जाता है। लिहाजा आप समझ सकते हैं कि बढ़ती महंगाई की सबसे ज्यादा मार गरीब एवं मध्यम वर्ग को झेलनी पड़ती है। आज संपन्न नागरिकों को भी चाहिए कि वे वस्तुओं के संग्रह की प्रवृत्ति से बचें और महंगाई को दूर करने में सरकार का सहयोग करें। पहले से ही कम वस्तुओं को बेकार और बर्बाद न करें, विशेषकर शादियों, घरेलू कार्यक्रमों और धार्मिक उत्सवों में अन्न और सब्जियों की बबार्दी न करें।

अधिकारियों से उम्मीद है कि वे खाद्य वस्तुओं, विशेषकर फल, सब्जियों की उपलब्धता पर नजर रखने के साथ-साथ उनके दामों को नियंत्रण में रखते हुए सब्जी विक्रेताओं को प्रतिदिन के भावों को लिखकर बोर्ड पर प्रदर्शित करने के लिए कहेंगे, ताकि गरीब एवं सामान्य जनता को उनके हाथों से लुटने से बचाया जा सके। इस बात से भी सभी भली-भांति परिचित ही हैं कि आम आदमी तक खाद्य सामग्री पहुंचने से पहले दलालों, बिचौलियों और आढ़तियों की जेबें गर्म हो चुकी होती हैं जबकि किसानों को कभी भी उनके उत्पादों के सही दाम नहीं मिलते हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि प्रशासन को यह पता ही नहीं है कि बाजारों में सब्जियों के दामों और अन्य खाद्य वस्तुओं का क्या हाल है। आज अधिकारी वर्ग अपनी कुर्सियों तक सीमित होकर रह गए हैं। आज से 30-35 वर्ष पूर्व जब कभी भी महंगाई का जिन्न अपना सिर उठाता था तो विपक्षी दलों द्वारा जरूर धरना-प्रदर्शन और विरोध प्रदर्शन की खबरें देखने-सुनने को मिलती थीं। लेकिन अब जैसे राजनीतिक दलों को आम जनता को होने वाली परेशानियों से कोई लेना-देना ही नहीं है। मूल्य सूची तो शायद ही कोई दुकानदार लगाता होगा, बिल देना तो दूर की कौड़ी समझिए। बाजारवाद की लूट में अधिकांश व्यापारियों की मौज लगी हुई है और वस्तुओं के मूल्यों पर सरकारी नियंत्रण कहीं नहीं दिखाई पड़ रहा है। आम ग्राहक सरेआम लुट रहा है। क्या आयकर विभाग ऐसे विक्रेताओं की कमाई तथा टैक्स देयता की भी जांच पड़ताल करेगा? प्रश्न यह भी उठता है कि जब देश में जीवनोपयोगी वस्तुओं की बहुलता है तो फिर मूल्यवृद्धि क्यों और किसान गरीब क्यों? यह सही है कि जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, लेकिन वैश्विक सहयोग और कई अन्य उपायों से वस्तुओं की उपलब्धता में भी उसी अनुपात में बढ़ोतरी हो रही है, तो भी चीजें इतनी महंगी क्यों बिक रही हैं और महंगाई का बोलबाला क्यों है?

अच्छे मानसून और बेहतर पैदावार के बावजूद खाद्य

वस्तुओं का कृत्रिम अभाव कौन पैदा कर रहा है, क्यों सरकारें इन पर लगाम नहीं लगा पा रही हैं? लोकतंत्र में राजनीतिक दलों को भी तो अंततः जनता जनार्दन की कृपा से ही सरकारें बनाने का सुफल मिलता है, तो फिर क्यों वे आम जनता के हितों को नजरअंदाज करते हैं? सरकार को चाहिए कि वह आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 और कालाबाजारी निवारण एवं आवश्यक वस्तु आपूर्ति रखरखाव अधिनियम 1980 के प्रावधानों को सख्ती से लागू करे। अंततः सवाल उठता है कि क्या सरकार और अफसरशाही के पास इस लूटपाट को अंजाम देने वाले जमाखोरों, मुनाफाखोरों और कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ किसी प्रकार की कोई कार्रवाई करने का जीवट है?

-अनुज आचार्य (स्वतंत्र लेखक)

मध्यप्रदेश के बेटी निकिता ने जीता फेमिना मिस इंडिया 2024 का खिताब

भोपाल। मध्य प्रदेश की निकिता पोरवाल ने फेमिना मिस इंडिया 2024 का खिताब जीता लिया है। दूसरे स्थान पर रेखा पांडे और तीसरे स्थान पर गुजरात की आयुषी ढोलकिया रहीं। 18 साल की निकिता ने अपने करियर की शुरुआत टीवी एंकर के रूप में की थी। उन्हें पिछले साल की विजेता नंदिनी गुप्ता ने ताज पहनाया, और नेहा धूपिया ने मिस इंडिया का सैश दिया। निकिता ने राजस्थान की नंदिनी की जगह ली, जिन्होंने 2023 में फेमिना मिस इंडिया का खिताब जीता था।

भीषण सड़क हादसे में दो दुधमुंही बच्चियों समेत चार की मौत, चार घायल

मथुरा। यूपी के मथुरा जिले के कोसीकलां क्षेत्र में गुरुवार सुबह हुये एक सड़क हादसे में दो दुधमुंही बच्चियों समेत चार लोगों की मौत हो गई जबकि चार अन्य घायल हो गए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे पर गहरा दुख जताते हुये घायलों के समुचित उपचार के निर्देश दिये हैं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलेष कुमार पाण्डे ने बताया कि हरियाणा के पलवल जिले के होडल कस्बे की ओर जा रही पिकप गाड़ी कोसी शेरगढ़ मार्ग पर नगला सातबिसा के पास एक बिजली के खंभे से टकरा गई जिससे बिजली का तार टूट गया। इससे घबड़ाकर सभी अपने बच्चों को लेकर पिकप के नीचे कूद पड़े। इसी बीच पिकप चालक ने दुर्घटना बचाने के लिए गाड़ी को पीछे की ओर चला दिया जिससे आठ लोग मैक्स पिकप से घायल हो गए तथा कुछ समय बाद चार की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि हादसे में गौरीदेवी (35), कोमल (2), कुंतीदेवी (28), प्रियंका (2) की मौके पर ही मौत हो गयी जबकि घायल काजल (17), जीरा (19), माना (21), गगन (3) को गंभीर हालत में सीएचसी कोसीकलां में भर्ती कराया जहां प्राथमिक उपचार के बाद सभी को जिला अस्पताल भेज दिया गया। पुलिस के अनुसार सभी हताहत बिहार के गया जिले से रेलगाड़ी से चलकर अलीगढ़ तक आए थे। वे किराये की एक मैक्स पिकप गाड़ी कर होडल जिला पलवल, हरियाणा के एक भट्टे में मजदूरी करने के लिए जा रहे थे।

दिल्ली-एनसीआर समेत पूरे उत्तर भारत में पड़ने लगी हल्की ठंड, दक्षिण भारत के कई राज्यों में बारिश का अलर्ट जारी

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर समेत पूरे उत्तर भारत में हल्की ठंड का अहसास होने लगा है। दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में दिन में तेज धूप और शाम होने के साथ ही हल्की-हल्की ठंड का अहसास होने लगा है। वहीं यूपी, बिहार, उत्तराखंड, हरियाणा और पंजाब में सुबह-शाम ठंड पड़ने लगी है और हल्की धुंध भी छाने लगी है। हालांकि पंखे अभी भी चल रहे हैं। मौसम विभाग का कहना है कि अगले हफ्ते दिन के तापमान में और गिरावट आएगी। गुरुवार को दिल्ली समेत उत्तर भारत में मौसम सामान्य रहेगा। सुबह-शाम ठंड का अहसास होगा। दिल्ली में 17 से 21 अक्टूबर तक अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री और न्यूनतम तापमान 16 से 17 डिग्री के आसपास रहेगा। वहीं दक्षिण भारत में बारिश का दौर जारी है। दक्षिण भारत के तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में अभी भी कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हो रही है। मौसम विभाग ने कई राज्यों के लिए बारिश का अलर्ट जारी किया है। इसमें आंध्र प्रदेश के अलावा बेंगलुरु और चेन्नई जैसे महानगर शामिल हैं। तमिलनाडु में चेन्नई समेत अन्य जगहों पर भारी बारिश से जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया है। कॉलोनियों से लेकर सड़कों तक पानी भर गया है। सड़क से लेकर ट्रेन और हवाई यातायात व्यवस्था चरमरा गई हैं। कई ट्रेनें और उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं। मौसम विभाग ने अगले दो दिन राज्य में भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। गुरुवार को भी रानीपेट और वेल्लोर समेत अन्य उत्तरी जिलों में भी बारिश हो हो सकती है। चेन्नई और उसके पड़ोसी जिलों में गुरुवार को भारी बारिश की संभावना है।

नशे के कारोबार पर हुए चौंकाने वाले खुलासे,मिली भगत से 7 राज्यों में फैला नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली और गुजरात से 13 हजार करोड़ रुपये की ड्रग्स पकड़े जाने के बाद जो खुलासे हो रहे हैं वो चौंकाने वाले हैं। आरोपियों से पूछताछ और जांच एजेंसियों की जांच में जो भी सामने आ रहा है वो काफी डरावना है। बताया जा रहा है कि इस नशे के कारोबार में ऐसे ऐसे दिग्गजों का संरक्षण है जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती है। तस्करों का नेटवर्क दिल्ली, पंजाब, कश्मीर, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और आंध्र प्रदेश तक फैला था। 'भारत की बर्बादी का सामान सबसे पहले गुजरात पहुंचता था।इस नेटवर्क में अंतरराष्ट्रीय से लेकर स्थानीय तस्कर शामिल हैं। दुबई से सरगना वीरेंद्र बसोया उर्फ वीरू के निर्देश पर यूके का तस्कर सतविंदर इसे समुद्री मार्ग के जरिए गुजरात तक पहुंचाता था, जहां फार्मास्यूटिकल कंपनी में कच्चे माल को रिफाइन कर इसे तस्करी के ट्रांजिट प्वाइंट के रूप में इस्तेमाल की जा रही दिल्ली भेजा जाता था। इसके बाद अन्य प्रदेशों में इसकी सप्लाई होती थी। कोकीन की खेप गुजरात पहुंचाने वाले कई फरार पूछताछ में आरोपियों ने यह भी खुलासा किया है कि अबतक बरामद करीब 1,300 किलो कोकीन की खेप दक्षिण अमेरिकी देशों से तस्करों द्वारा गुजरात की ड्रग्स कंपनी तक पहुंचाई गई थी। हालांकि, गिरोह का पर्दाफाश होते ही नेटवर्क से जुड़े कई बड़े खिलाड़ी खासतौर से यूके नागिरक और उसके नेटवर्क से जुड़े तस्कर भूमिगत हो गए हैं।

जम्मू-कश्मीर में बिना राज्य के दर्जे के सरकार गठन अधूरा : राहुल गांधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में नई सरकार का गठन हो गया है। उमर अब्दुल्ला ने सीएम पद पर विरामान हो गए हैं। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी समेत कई बड़े नेता उनके शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद थे। कांग्रेस सरकार में शामिल नहीं हुई है। कांग्रेस का कहना है कि जब तक जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं मिल जाता, तब तक वह सरकार में शामिल नहीं होगी।

जम्मू-कश्मीर में उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व में 2019 में धारा 370 हटाए जाने के बाद पहली निर्वाचित सरकार है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने उमर अब्दुल्ला को सीएम बनने पर बधाई दी। राहुल गांधी ने कहा कि बिना राज्य के दर्जे के सरकार गठन अधूरा लगता है। उन्होंने दोहराया कि जम्मू-कश्मीर के लोगों से लोकतंत्र छीन लिया गया था। उन्होंने वादा किया कि जब तक जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं मिल जाता, तब तक वह लड़ते रहेंगे। राहुल गांधी ने अपने पोस्ट में लिखा-आज हम पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल होने तक अपनी लड़ाई जारी रखने का संकल्प दोहराते हैं।

उमर अब्दुल्ला ने राहुल गांधी को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि प्रियंका गांधी के साथ राहुल गांधी की मौजूदगी से उन्हें और उनके परिवार को बहुत प्रोत्साहन मिला। उमर अब्दुल्ला ने एक्स पर लिखा-जम्मू-कश्मीर के लोग आपकी ओर देख रहे हैं। हमें अपना राज्य का दर्जा वापस पाने के लिए आपके समर्थन की जरूरत है। प्रियंका गांधी के साथ आपकी उपस्थिति ने हमें बहुत प्रोत्साहन दिया और परिवार को वास्तव में आप दोनों के साथ कुछ समय बिताकर खुशी हुई। कांग्रेस के जम्मू-कश्मीर अध्यक्ष तारिक हमीद कर्रा ने कहा कि कांग्रेस इस बात से नाखुश है कि जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं दिया गया है। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं दिया गया है। हम नाखुश हैं, इसलिए हम फिलहाल सरकार में शामिल नहीं हो रहे हैं।

प्रियंका गांधी ने भी एक्स पर उमर अब्दुल्ला और उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों को बधाई दी। उन्होंने एक्स पर लिखा-जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और उनके मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई। जम्मू-कश्मीर की जनता को आपके वोट की ताकत से न्याय और लोकतंत्र की आवाज बुलंद करने के लिए धन्यवाद। भविष्य के लिए शुभकामनाएं। उन्होंने आगे लिखा, इंडिया गठबंधन सरकार लोगों के लंबित अधिकारों को बहाल करने के साथ-साथ अपने सभी वादों और लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पूरी लगन से काम करेगी।

भारत माता की जय और राष्ट्रीय ध्वज को 21 बार सलामी देने की अनोखी सजा

भोपाल। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने पाकिस्तान समर्थक नारे लगाने के आरोपी एक व्यक्ति को जमानत दे दी है। लेकिन जमानत के साथ आरोपी को भोपाल के एक पुलिस स्टेशन में राष्ट्रीय ध्वज को 21 बार सलामी देने और महीने के अंत तक महीने में दो बार भारत माता की जय का नारा लगाने का निर्देश दिया है।

आरोपी की पहचान फैजल उर्फ फैजान के रूप में हुई है, इस मई में मिसरोद पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज होने के बाद गिरफ्तार किया गया था। अभियोजन पक्ष ने तर्क दिया कि फैजान के कार्यों ने कलह को बढ़ावा दिया और देश की अखंडता को कमजोर किया। अदालत के फैसले में न्यायमूर्ति पालीवाल ने कहा कि फैज़ान को 50,000 रुपये के निजी बांड और इतनी ही राशि की एक सॉल्वेंट ज़मानत जमा करने पर रिहा किया जा सकता है। इसके अलावा, अदालत ने जमानत के हिस्से के रूप में कई अनूठी शर्तें लगाईं। फैजान को मुकदमा खत्म होने तक हर महीने के पहले और चौथे मंगलवार को मिसरोद पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट करना होगा। इस दौरान पुलिस स्टेशन पर फहराए गए राष्ट्रीय ध्वज को 21 बार सलामी देनी होती है और दो बार भारत माता की जय का नारा लगाना होता है। अदालत ने इस बात पर जोर दिया कि ये स्थितियाँ उनमें उस देश के लिए गौरव की भावना पैदा करने के लिए बनाई गई थीं जिसमें उनका जन्म और पालन-पोषण हुआ था।

चीन सीमा के पास गाँव में फंसे मुख्य चुनाव आयुक्त, पूरी रात अंधेरे में बिताई

-16 घंटे बाद रेस्क्यू कर हेलीकॉप्टर से सुरक्षित मुनस्यारी पहुंचाया

देहरादून (एजेंसी)। भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में खराब मौसम के चलते चीन सीमा के पास एक सुदूर गाँव रालम में फंस गए थे। करीब 16 घंटे बाद गुरुवार सुबह उन्हें हेलीकॉप्टर से सुरक्षित मुनस्यारी पहुँचाया गया। राजीव कुमार मिलम जा रहे थे, तभी खराब मौसम के कारण उनके हेलीकॉप्टर को रालम गाँव में उतरना पड़ा। यह घटना बुधवार को हुई। उनके साथ उत्तराखंड के अपर मुख्य निर्वाचन अधिकारी विजय कुमार जोगदंडे और सीईसी के पीएसओ नवीन कुमार भी थे। रात उन्हें ग्रामीणों की मदद से एक घर मिला और उन्होंने पूरी रात अंधेरे में आग के सामने हाथ तापते हुए बिताई।

रालम गाँव में बिजली और फोन जैसी बुनियादी सुविधाएँ नहीं हैं। ग्रामीणों ने बताया कि बारिश के कारण तापमान 5 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। राजीव कुमार और उनकी टीम इस ठंड और असुविधा का सामना करना पड़ा। गुरुवार सुबह मौसम साफ होने पर उन्हें और उनकी टीम को हेलीकॉप्टर से मुनस्यारी लाया गया। मुनस्यारी हेलीपैड पर पिथौरागढ़ के प्रशासनिक अधिकारी, आईटीबीपी और बीआरओ के अधिकारी और कर्मचारी उनकी अगवानी के लिए मौजूद थे। यह घटना पहाड़ी क्षेत्रों में मौसम की अनिश्चितता को दर्शाती है। राहत की बात यह है कि सीईसी और उनकी टीम सुरक्षित हैं।

चीन के कब्जे वाले तिब्बत की सीमा से लगे पिथौरागढ़ जिले के इस सुदूर इलाके में देश के आजाद होने के बाद भी माइग्रेशन होता है। रालम में रहने वाले लोगों को बिजली संकट से जूझना पड़ता है। शासन-प्रशासन रालम गांव को आज भी बिजली सेवा से नहीं जोड़ सका है लेकिन हेलीकॉप्टर की आपात लैंडिंग के बाद मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य लोगों को भी इस समस्या से जूझना पड़ा। मदद पहुंचने में होने वाली देरी से रालम में फंसे मुख्य चुनाव आयुक्त और उनकी टीम के लिए गांव में रात गुजरना ही आखिरी विकल्प था। गांव में एक घर खुलवाया गया। चीन सीमा के नजदीक बसे इस गांव में हर साल अप्रैल से अक्टूबर प्रथम सप्ताह तक तीन हजार से ज्यादा लोग माइग्रेट होकर पहुंचते हैं। करीब साढ़े चार माह तक ग्रामीण रालम में ही रहते हैं।

तेजस्वी का आरोप, बिहार में कहें कि शराबबंदी... लेकिन हर चौक-चौराहों पर उपलब्ध

-नीतिश को कुछ खिलाया जा रहा, वे बिहार चलाने लायक नहीं रह गए

पटना (एजेंसी)। जहरीली शराब के सेवन से सीवान में 20 और छपरा में 4 लोगों की दुखद मौत के बाद बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर हमला कर कहा कि मुख्यमंत्री और उनका किचन कैबिनेट अनैतिक और सिद्धांतहीन राजनीति के प्रणेता बने हैं। तेजस्वी ने लिखा कि सत्ता संरक्षण में जहरीली शराब के कारण 27 लोगों की हत्या की गई है। दर्जनों की आँखों की रोशनी चली गई। बिहार में कथित शराबबंदी है, लेकिन सत्ताधारी नेताओं-पुलिस और माफिया के गठजोड़ के कारण हर चौक-चौराहों पर शराब उपलब्ध है।

राजद नेता ने कहा कि इतने लोग मारे गए लेकिन मुख्यमंत्री नीतीश ने शोक-संवेदना तक व्यक्त नहीं की। जहरीली शराब से, अपराध से प्रतिदिन सैकड़ों बिहारवासी मारे जाते है लेकिन मुख्यमंत्री और उनकी किचन कैबिनेट के लिए यह सामान्य बात है। उन्होंने कहा कि कितने भी लोग मारे जाए लेकिन मजाल है किसी वरीय अधिकारी पर कोई कारवाई हो? इसके विपरीत उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा?

तेजस्वी ने कहा कि अगर शराबबंदी के बावजूद बिहार के हर चौक-चौराहे व नुक्कड़ पर शराब उपलब्ध है, तब क्या यह गृह विभाग और मुख्यमंत्री की विफलता नहीं है? क्या मुख्यमंत्री जी होशमंद है? इन हत्याओं का दोषी कौन? उन्होंने कहा कि समीक्षा बैठक के नाम पर ढोंग होता है। नीतीश को लेकर तेजस्वी ने बड़ा दावा किया कि उन्हें कुछ खिलाया-पिलाया जा रहा है। अब वह बिहार चलाने लायक नहीं रह गए।

गुरुवार को नीतीश ने सीवान और सारण जिले में हुए जहरीली शराब कांड की उच्चस्तरीय समीक्षा की। समीक्षा के बाद सीएम ने मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग के सचिव को मौके पर जाकर पूरी स्थिति की जानकारी लेने और सभी बिंदुओं पर गहन जांच करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही उन्होंने इसमें शामिल लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का भी निर्देश दिया।

यह सिर्फ भाजपा-आरएसएस का प्रचार, सुप्रीम कोर्ट में न्याय की देवी की आंखों से काली पट्टी उतरी ,संजय राउत ने जताया ऐतराज

मुंबई (एजेंसी)। औपनिवेशिक विरासत को त्यागने और अधिक समकालीन न्याय को अपनाने और न्याय के भारतीयकरण को देखने के प्रयास में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने अपने पुस्तकालय के लिए लेडी जस्टिस की एक पुनः डिज़ाइन की गई प्रतिमा का अनावरण किया। प्रतिमा में लेडी जस्टिस की तलवार को संविधान के साथ प्रतिस्थापित किया गया है, उनकी आंखों से पट्टी हटा दी गई है और वह एक साड़ी में हैं। हालाँकि, शिव सेना (यूबीटी) नेता संजय राउत नई प्रतिमा को लेकर आक्रामक रुख अपनाए हुए हैं। परिवर्तन की निंदा करते हुएराउत ने इसे भाजपा-आरएसएस का प्रचार करार दिया है।

इस प्रतिमा का अनावरण 2023 में सीजेआई चंद्रचूड़ ने किया था, जिसके बाद से ही ये तस्वीर वायरल हो गई। आंखों पर पट्टी बांधने का मतलब कानून के समक्ष समानता का प्रतिनिधित्व करना था, जिसका अर्थ था कि अदालतें अपने सामने आने वाले लोगों की संपत्ति, शक्ति या स्थिति के अन्य मार्करों को नहीं देख सकती हैं, जबकि तलवार अधिकार और अन्याय को दंडित करने की शक्ति का प्रतीक है। सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीशों की लाइब्रेरी में मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के आदेश पर स्थापित की गई नई प्रतिमा में आंखें खुली हैं और बाएं हाथ में तलवार की जगह संविधान है।

नई प्रतिमा के पीछे स्पष्ट और प्रगतिशील इरादे के बावजूद, शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने इस बदलाव पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन भाजपा और आरएसएस का एक प्रचार और एक अभियान है। फिर उन्होंने सुप्रीम कोर्ट पर निशाना साधते हुए पूछा कि न्याय की मूर्ति के हाथ में तलवार की जगह संविधान देकर वे क्या साबित करना चाह रहे हैं? वे पहले से ही संविधान की हत्या कर रहे हैं और प्रतिमा से आंखों की पट्टी हटाकर वे चाहते हैं कि हर कोई भ्रष्टाचार और संविधान की हत्या को खुलेआम देखे।

मेरे परिवार को न्याय चाहिए ! बाबा सिद्दीकी की हत्या पर बेटे जीशान ने की मांग

मुंबई (एजेंसी)। विधायक जीशान सिद्दीकी ने अपने पिता बाबा सिद्दीकी की हत्या के लिए न्याय की मांग की है, उनका कहना है कि मेरे पिता ने गरीब निर्दोष लोगों के जीवन और घरों की रक्षा करते हुए अपनी जान गंवा दी। आज, मेरा परिवार टूट गया है लेकिन उनकी मौत का राजनीतिकरण नहीं किया जाना चाहिए और निश्चित रूप से मुझे न्याय चाहिए, मेरे परिवार को न्याय चाहिए! एनसीपी अजित पवार गुट के नेता बाबा सिद्दकी की 12 अक्टूबर की रात गोली मारकर हत्या कर दी गई। पकड़े गए आरोपियों ने पूछताछ में बताया है कि उन्हें निर्देश मिले थे कि बाबा सिद्दीकी ही नहीं उनके बेटे जिशान भी उनके निशाने पर थे। खबर के अनुसार शूटर्स को निर्देश मिले हुए थे कि जो भी मिले उसे मार डालो। पूछताछ में आरोपियों ने अपने प्लान के बारे में भी बताया है।

खबरों के अनुसार आरोपियों ने पहले बाबा सिद्दीकी और फिर उनके बेटे की आंखों पर काली मिर्च वाला स्प्रे मारना चाहते थे उनका सोचना था कि ऐसे सिद्दीकी परिवार के लोगों को दिखना बंद हो जाएगा। लेकिन ये प्लान पूरा नहीं हो पाया क्योंकि इस केस के आरोपी शिव कुमार गौतम ने सारे प्लान छोड़ते हुए फायर प्लान खोल दिया। जिससे अन्य आरोपियों को भी पहले ही फायर करना पड़ा। बाबा सिद्दीकी के साथ एक और व्यक्ति को गोली लगी थी। जिस समय गोली जीशान सिद्दीकीचली वो मौका-ए-वारदात से गुजर रहा था। उसी समय व्यक्ति को गोली लग गई। उसे उपचार के लिए भाभा अस्पताल भर्ती कराया गया।

सूत्रों ने बताया कि जीशान खाना खाने के लिए पहले ही निकल चुके थे। सूत्रों ने बताया कि अगर जीशान सिद्दीकी खाने के लिए निकले नहीं होते, तो उनकी भी हत्या हो सकती थी। जीशान बांद्रा से ही कांग्रेस विधायक हैं। उनके विधानसभा क्षेत्र में स्क्रीन-डेवलपमेंट को लेकर विवाद चल रहा था।

सीबीआई, ईडी और आयकर को निष्पक्ष होकर काम करना चाहिए

-मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का केंद्र पर हमला

नई दिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने सीबीआई, ईडी और आयकर विभाग जैसी जांच एजेंसियों के बहाने केंद्र की मोदी सरकार पर निशाना साधा है। सीएम सिद्धारमैया ने कहा कि सीबीआई, ईडी और आयकर जैसी केंद्रीय एजेंसियों को निष्पक्ष होकर काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस राज्य में तीन विधानसभा क्षेत्रों में 13 नवंबर को होने वाले उपचुनाव में जीतने को तैयार है।

सिद्धारमैया ने कहा कि प्रदेश में नवंबर में होने वाले उपचुनाव का कांग्रेस पार्टी प्रभावी ढंग से मुकाबला करेगी और सभी तैयारियां की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र के अधीन आने वाले सीबीआई, ईडी और आईटी सहित सभी संगठनों को निष्पक्ष रूप से काम करना चाहिए और किसी राजनीतिक दल के पक्ष में काम नहीं करना चाहिए। उन्होंने दावा किया कि नागेंद्र (पूर्व मंत्री बी नागेंद्र) ने कहा है कि उन पर ईडी ने दबाव डाला था। उन्होंने बताया कि उन पर मेरा और डी के शिवकुमार (उपमुख्यमंत्री) का नाम लेने का दबाव डाला गया था।

पूर्व कैबिनेट मंत्री बी नागेंद्र ने जेल से बाहर आने पर आरोप लगाया कि कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि एसटी विकास निगम (केएमवीएसटीडीसी) में करोड़ों रूपये के कथित घोटाले में मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और उप मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार का नाम लेने के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने उन पर दबाव डाला था।

मैरिटल रेप मामले की सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई: एनल सेक्स रेप नहीं... हम इसी को चुनौती दे रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट मैरिटल रेप को अपराध घोषित करने से जुड़ी याचिकाओं पर गुरुवार को सुनवाई की है। याचिकाओं में कहा गया है कि क्या किसी व्यक्ति को अपनी पत्नी को संबंध बनाने के लिए मजबूर करने के लिए कानूनी संरक्षण मिलना चाहिए। मामले की सुनवाई सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच कर रही है। सीजेआई ने सुनवाई करते हुए कहा, अपवाद 2 कहता है कि पत्नी के साथ एनल सेक्स रेप नहीं है। इस पर याचिकाकर्ता के वकील ने कहा, हम इसी को चुनौती दे रहे हैं।

सुनवाई के दौरान सीजेआई ने कहा कि, जब पत्नी 18 साल से कम की होती है, तब यह रेप है और जब यह 18 साल से अधिक की होती है, तब यह नहीं है। यही बीएनएस और आईपीसी में अंतर है। इस पर वकील नंदी ने कहा, यदि पति एनल सेक्स करता है, तब पत्नी को अपवाद 2 के तहत छूट दी जाती है, जबकि यह यौन क्रिया नहीं है। इस पर जबाव देकर सीजेआई ने कहा कि कानून कहता है कि चाहे वजाइनल सेक्स हो या एनल सेक्स। जब तक यह विवाह के भीतर किया जाता है, तब तक यह बलात्कार नहीं होगा। वकील नंदी की जिहर, धारा 63 ए यह भी कहती है कि यदि कोई पुरुष किसी अन्य पुरुष का लिंग किसी महिला की योनि, मुंह आदि में इंसर्ट कराता है तब वह भी बलात्कार होगा। इस पर सीजेआई, लेकिन यह अपवाद के अंतर्गत नहीं आएगा। सुनवाई में हिस्से लेते हुए जस्टिस पारदीवाला ने कहा कि यौन क्रिया शब्द को सही तरीके से परिभाषित नहीं किया गया है? मान लीजिए कि कोई पति पत्नी को किसी अन्य पुरुष के साथ संबंध बनाने के लिए मजबूर करता है तब क्या वह अपवाद 2 के अंतर्गत आएगा? नहीं, वह नहीं आएगा। वकील नंदी अपनी बात रखते हुए, वह आएगा। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नहीं, यह गलत व्याख्या है। वकील नंदी ने कहा कि यदि किसी महिला के साथ पति, अजनबी या तलाकशुदा पति द्वारा जबरन संबंध बनाया जाता है, तब यह रेप ही है। अगर लिव इन रिलेशनशिप में रह रही महिला के साथ बिना सहमति सेक्स किया जाता है तब यह भी रेप है, लेकिन अगर किसी विवाहित महिला के साथ ऐसा होता है तब यह रेप क्यों नहीं? इस दलील पर सीजेआई ने कहा कि केंद्र सरकार ने अपने जवाब में कहा कि, पति-पत्नी के बीच बिना इजाजत के संबंध बनाने को अपराध घोषित करने विवाह संस्था अस्थिर होगी। इस पर आपका क्या कहना है? इस पर वकील नंदी ने बताया कि एक पुराने केस (केएस पुट्टुस्वामी मामले) में यह माना गया कि निजता की आड़ में महिलाओं के अधिकारों का हनन या लिंग आधारित हिंसा नहीं की जा सकती।

संक्षिप्त समाचार

घाना में हैजा के नौ मामले सामने आए

अकरा, एजेंसी। घाना के दक्षिण-पूर्वी ग्रेटर अकरा क्षेत्र में हैजा के नौ मामले सामने आए हैं। घाना स्वास्थ्य सेवा (जीएचएस) ने बताया है कि उसे अडा ईस्ट और अडा वेस्ट जिलों से यह पुष्टि प्राप्त हुई है कि रोगियों के नमूने हैजा के लिए सकारात्मक पाए गए हैं। हैजा का पहला मामला अडा ईस्ट डिस्ट्रिक्ट में एक अंतिम संस्कार में भाग लेने के कुछ दिनों बाद उल्टी, दस्त और पेट दर्द जैसे लक्षणों के साथ सामने आया और उसको एक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया था। शिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, 11 अक्टूबर तक, अडा ईस्ट और वेस्ट जिलों में ऐसे 9 मामलों की पुष्टि हो चुकी थी। महामारी को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक उपाय किए गए हैं। इसमें कहा गया है कि संपर्क पहचान, ट्रेसिंग और फॉलो-अप के सभी कार्य चल रहे हैं, जिसमें दैनिक सक्रिय सामुदायिक मामलों की खोज भी शामिल है। जीएचएस ने लोगों से स्वच्छता प्रोटोकॉल का पालन करने और संक्रमण से बचने के लिए अच्छे से पके हुए भोजन का सेवन करने की सलाह दी है।

कनाडा को आरएसएस और भारतीय राजनयिकों से बढ़ा खतरा, जल्द लगे बैन- कनाडाई सिख नेता जगमीत सिंह

ओटावा, एजेंसी। कनाडा के राष्ट्रीय पुलिस बल 'रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस द्वारा भारतीय राजनयिकों पर एक सिख अलगाववादी की हत्या में शामिल होने का आरोप लगाए जाने के एक दिन बाद मंगलवार को कनाडा के सिख नेता जगमीत सिंह ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय राजनयिकों पर प्रतिबंध लगाने की मांग की। सिंह 'न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी (एनडीपी) के नेता हैं, जिसने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की सत्तारूढ़ सरकार का पूर्व में समर्थन किया था। भारत ने सिख अलगाववादी नेता की हत्या के मामले में कनाडा के आरोपों से इनकार किया है और कहा है कि कनाडा आतंकवादी समूहों को पनाह दे रहा है तथा अलगाववादी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है। एनडीपी नेता जगमीत सिंह खालिस्तान समर्थक रुख के लिए जाने जाते हैं। सिंह ने ओटावा में एक संवाददाता सम्मेलन में सार्वजनिक सुरक्षा समिति के साथ आपातकालीन बैठक का अनुरोध किया ताकि यह बेहतर ढंग से समझा जा सके कि क्या वे कनाडाई लोगों की सुरक्षा के लिए कोई और कदम उठा सकते हैं। सिंह ने कहा, ''हम मांग करते हैं कि 'लिबरल पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार भारतीय राजनयिकों पर कड़े प्रतिबंध लगाए और भारत के हिंसक, उग्रवादी, आतंकवादी भारतीय संगठन आरएसएस को बाहर निकाले, जो कनाडा और अन्य देशों में भी सक्रिय है। उन्होंने कहा, ''ये बहुत गंभीर आरोप हैं। यही बात सामने आई है कि भारत सरकार, विशेष कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार कनाडा में राजनयिकों के माध्यम से आपराधिक तत्वों से जुड़ी हुई है जिन्होंने कनाडावासियों के घरों पर गोलीबारी की, कनाडाई लोगों के कारोबारी प्रतिष्ठानों पर गोलीबारी की, कनाडाई लोगों की हत्या की। यह बहुत गंभीर है।

हैरिस ने चुनाव प्रचार के दौरान अश्वेत लोगों से भेदभाव का मुद्दा उठाया

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति पद का चुनाव करीब आने के मद्देनजर हैरिस ने अश्वेत पुरुषों में जोश भरने का काम किया जबकि ट्रंप ने जॉर्जिया में 'फॉक्स न्यूज' के एक कार्यक्रम में महिलाओं पर ध्यान केंद्रित किया। डेमोक्रेटिक पार्टी की राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार कमला हैरिस ने भेदभावपूर्ण प्रवर्तन नीतियों से निपटने के लिए कानून लाने पर जोर देते हुए मंगलवार को आगाह किया कि रिपब्लिकन पार्टी के प्रत्याशी डोनाल्ड ट्रंप कठोर पुलिसिंग हथकंडों को ''संस्थागत'' बनाने की कोशिश करेंगे जिसका देशभर में अश्वेत पुरुषों पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। रेडियो कार्यक्रम 'द ब्रेकफास्ट क्लब' के मेजबान चार्लामेगने से बातचीत में हैरिस ने कहा कि वह मारिजुआना को अपराध की श्रेणी से बाहर करने के लिए काम करेंगे जिसके कारण सबसे ज्यादा अश्वेत लोगों की गिरफ्तारियां होती हैं। साथ ही उन्होंने माना कि अश्वेत लोगों से रोजमर्रा की जिंदगी में नस्लीय भेदभाव किया जाता है। अमेरिकी राष्ट्रपति पद का चुनाव करीब आने के मद्देनजर हैरिस ने अश्वेत पुरुषों में जोश भरने का काम किया जबकि ट्रंप ने जॉर्जिया में 'फॉक्स न्यूज' के एक कार्यक्रम में महिलाओं पर ध्यान केंद्रित किया। इस साल राष्ट्रपति पद के चुनाव में अंतिम वोट डाले जाने से ठीक 21 दिन पहले, हैरिस और ट्रंप उन प्रमुख निर्वाचन क्षेत्रों में मतदाताओं में जोश भरने की कोशिश कर रहे हैं जहां मुकाबला कड़ा लग रहा है। वह महिलाओं को लुभाने की कोशिश कर रही हैं जबकि ट्रंप अश्वेत पुरुषों के मुद्दों पर नरमी दिखा रहे हैं जिन्होंने अतीत में डेमोक्रेटिक पार्टी का भारी समर्थन किया है।

भारत-कनाडा विवाद में अमेरिका बोला- भारत सहयोग नहीं कर रहा, जांच में मदद करे

वाशिंगटन, एजेंसी। सिख अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के मुद्दे को लेकर भारत और कनाडा के बीच कूटनीतिक विवाद मंगलवार को और गहरा गया। कनाडा ने भारत के खिलाफ संभावित प्रतिबंधों का संकेत दिया वहीं, भारत ने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया। इस पूरे विवाद में अब अमेरिका भी कूद गया है। अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कनाडा के आरोपों को गंभीर बताया और कहा कि भारत को कनाडा के साथ इसकी जांच में सहयोग करना चाहिए।

अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने संवाददाताओं से कहा, जहां तक कनाडा के आरोपों की बात है, तो हमने स्पष्ट कर दिया है कि आरोप बेहद गंभीर हैं और उन्हें गंभीरता से लेने की जरूरत है। हम चाहते हैं कि भारत सरकार कनाडा के साथ इसकी जांच में सहयोग करे। उन्होंने आगे कहा भारत ने इस मसले में एक वैकल्पिक रास्ता चुना है। गौरतलब है कि हरदीप सिंह निज्जर हत्याकांड को लेकर कनाडा के गंभीर आरोपों के बाद भारत ने सोमवार को कनाडाई राजदूतों को 19 अक्टूबर तक देश छोड़ने के आदेश दिए। साथ ही निज्जर की हत्या की जांच से अपने राजनयिक को जोड़ने के कनाडा के आरोपों को खारिज करते हुए वहां से अपने उच्चायुक्त को वापस बुलाने की घोषणा की।

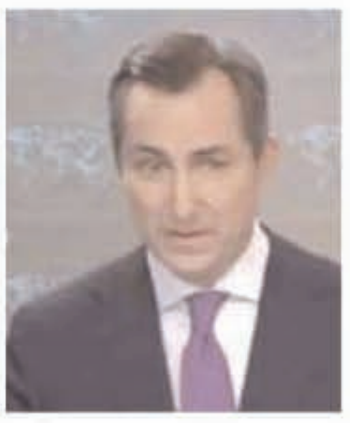

भारत ने कनाडा में आपराधिक गिरोहों से भारतीय एजेंटों को जोड़ने के कनाडाई अधिकारियों के प्रयासों को पुरजोर तरीके से खारिज किया। आधिकारिक सूत्रों ने कहा है कि कनाडा का यह दावा सच नहीं है कि उसने निज्जर मामले में भारत के साथ साक्ष्य साझा किए थे। वहीं, दोनों देशों में तनाव बढ़ने के बीच कनाडा की विदेश मंत्री मेलानी जोली ने कहा कि भारत के खिलाफ पाबंदी लगाने की संभावना बनी हुई है और हमारे पास ''सभी विकल्प विचाराधीन हैं।

3 दिन में भारत-कनाडा के बीच क्या-क्या हुआ : 13 अक्टूबर- कनाडा ने भारत को एक चिट्ठी भेजी। इसमें कहा कि भारतीय हाई-कमिश्नर संजय कुमार वर्मा और दूसरे डिप्लोमैट्स एक मामले में संदिग्ध हैं। कनाडा ने मामले की जानकारी नहीं दी, पर इसे निज्जर मामले से जोड़कर देखा गया। 14 अक्टूबर- भारत ने अपने डिप्लोटमैट्स को संदिग्ध बताए जाने पर विरोध जताया और कनाडा के राजदूत को तलब किया। कुछ ही घंटों बाद भारत ने संजय कुमार वर्मा और दूसरे डिप्लोमेट्स को वापस बुला लिया। देर रात खबर आई की कनाडा ने भी भारत से अपने 6 राजदूतों को वापस आने का आदेश दिया है। 15 अक्टूबर- कनाडा के प्रधानमंत्री ने निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंट्स के सीधे तौर पर शामिल होने का आरोप लगाया। दावा- अमित शाह के इशारे पर खालिस्तानियों पर हमला हुआ अमेरिकी मीडिया हाउस वॉशिंगटन पोस्ट ने दावा किया है कि गृह मंत्री अमित शाह और रॉ एजेंसी ने मिलकर कनाडा में खुफिया जानकारी इकट्ठा करने और खालिस्तानी आतंकियों पर हमले की इजाजत दी थी। वॉशिंगटन पोस्ट ने एक कनाडाई अधिकारी के हवाले से बताया कि भारतीय डिप्लोमैट्स कई लोगों पर कनाडा जाने की इजाजत के बदले खुफिया जानकारी देने का दबाव बनाते थे। इस काम का नेतृत्व कनाडा में भारत के हाई कमिश्नर संजय वर्मा करते थे। रिपोर्ट के मुताबिक 12 अक्टूबर को कनाडा के एनएसए ने भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल को एक मीटिंग में इसकी जानकारी भी दी थी।

यूक्रेनी सेना में भर्ती के लिए छापेमारी-बार, रेस्टोरेंट से लेकर शादी समारोह तक में रेड

कीव, एजेंसी। सैनिकों की कमी से जूझ रही यूक्रेनी सेना अब शादी समारोह, नाइट क्लब, बार, रेस्टोरेंट और कॉन्सर्ट हॉल जैसी जगहों पर छापे मार रही है। दरअसल, यूक्रेन ने जंग की शुरुआत के बाद से ही पुरुषों के लिए सेना में शामिल होना अनिवार्य कर दिया था। इसके लिए इस साल अप्रैल में युवाओं से पंजीयन कराने के लिए कहा गया था। इस आदेश के बाद से यूक्रेन के युवा सेना में शामिल होने से बचने की कोशिशों में लगे हुए हैं। यूक्रेन फरवरी 2022 से रूस के साथ जंग लड़ रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस जंग में यूक्रेन करीब 80 हजार सैनिकों की मौत हो चुकी है। इस वजह से सैनिकों की कमी हो गई, जिसके चलते यूक्रेन नए सैनिकों की भर्ती कर रहा है। यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की का कहना है कि सेना में कम से कम 5 लाख युवाओं की भर्ती करने की जरूरत है। राजधानी कीव में सेना के लिए पंजीयन नहीं कराने वाले युवाओं की पहचान के लिए सेना के छापे आम हो गए है। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार सेना का ये अभियान मुख्य रूप से युवाओं के सैन्य पंजीकरण दस्तावेजों की जांच और नियमों का उल्लंघन करने वालों को गिरफ्तार करने के लिए है।

गाजा में पोलियो टीकाकरण अभियान का दूसरा दौर शुरू, करीब 6 लाख बच्चों को दी जाएगी खुराक, संयुक्त राष्ट्र

वाशिंगटन, एजेंसी। इजरायली हमलों में तबाह हो चुके गाजा में पोलियो टीकाकरण अभियान का दूसरा चरण शुरू हो गया है। संयुक्त राष्ट्र के मानवीय कार्यकर्ताओं ने बताया कि अभियान गाजा पट्टी के मध्य क्षेत्र में शुरू हुआ। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, मानवीय मामलों के समन्वय के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (ओसीएचए) ने सोमवार को कहा कि दो सप्ताह से भी कम समय में, यूएनआरडब्ल्यूए (फिलिस्तीनियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत एजेंसी), विश्व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र बाल कोष का लक्ष्य 10 वर्ष से कम आयु के लगभग 5,90,000 बच्चों को नोवल ओरल पोलियो वैक्सीनेशन की दूसरी खुराक देना है। टीकाकरण का पहला चरण 1 से 12 सितंबर तक लागू किया गया था, जिसमें 5,59,000 से अधिक बच्चों तक पहुंचा गया। पहले दौर की तरह, दूसरे दौर में भी तीन चरण होंगे, जिनमें से प्रत्येक में तीन अभियान दिवस और एक कैच-अप दिवस शामिल होगा। गाजा में अल अक्सा अस्पताल के पास विस्थापित लोगों के टेंटों पर रविवार रात को इजरायली हमले पर प्रतिक्रिया देते हुए, संयुक्त राष्ट्र के कार्यवाहक अवर महासचिव जॉयस मसूया ने कहा कि फिलिस्तीनियों को जो परेशानियां झेलनी पड़ रही है, उसका कोई अंत नहीं है। एक बयान में, मसूया ने कहा कि गाजा में लोगों के लिए वास्तव में कोई सुरक्षित स्थान नहीं है। उन्होंने अत्याचारों को समाप्त करने, नागरिकों और सिविलियन इंफ्रास्ट्रक्चर की सुरक्षा की मांग की। बता दें इस हमले में कई लोगों की जलकर मौत हो गई, जबकि महिलाओं और बच्चों सहित कई अन्य लोग गंभीर रूप से झुलस गए। इससे कुछ घंटे पहले नुसेरात में एक स्कूल में बने शेल्टर पर हमला हुआ था, जिसमें कथित तौर पर 20 से अधिक लोगों की मौत हो गई थी और कई अन्य घायल हो गए थे।

ऑस्ट्रेलियाई सरकार की ट्रेवल एडवाइजरी - छोड़ दें इजरायल

कैनबरा, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया सरकार ने इजरायल और फिलिस्तीन के लिए अपनी ट्रेवल एडवाइजरी को अपग्रेड किया है। लोगों से कहा गया कि वे इस क्षेत्र की यात्रा न करें। इसके साथ ही इजरायल में मौजूद ऑस्ट्रेलियाई नागरिकों से देश छोड़ने अपील की गई। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, विदेश मामलों और व्यापार विभाग ने सोमवार रात को इजरायल और कब्जे वाले फिलिस्तीनी क्षेत्रों के लिए आधिकारिक ट्रेवल एडवाइजरी में बदलाव कर उसे उच्चतम चेतावनी स्तर पर पहुंचा दिया। सरकार की स्मार्टट्रैवलर सर्विस के जरिए भेजे गए अपडेट में, विभाग ने कहा कि अब वह ऑस्ट्रेलिया के लोगों को अस्थिर सुरक्षा स्थिति, सशस्त्र संघर्ष, नागरिक अशांति और आतंकवाद के कारण दोनों क्षेत्रों में यात्रा न करने की सलाह देता है। अपडेट में कहा गया, यदि आप इजरायल में हैं, तो आपको कमर्शियल फ्लाइट्स उपलब्ध रहने, सीमा पार करने के रास्ते खुले रहने और ऐसा करना सुरक्षित होने तक वहां से चले जाना चाहिए। सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए एक बयान में, विदेश मंत्री पेनी वोंग ने कहा कि सरकार को इस बात की गंभीर चिंता है कि इजरायल और कब्जे वाले फिलिस्तीनी क्षेत्रों में सुरक्षा की स्थिति तेजी से बिगड़ सकती है। विभाग ने ऑस्ट्रेलियाई नागरिकों और क्षेत्र में स्थायी निवासियों को क्राइसिस रजिस्टर्ड पोर्टल पर रजिट्रेशन करने की सलाह दी।

अमेरिका का दुश्मनों से ज्यादा सहयोगियों ने फायदा उठाया, चुनाव से पहले यूरोपीय संघ पर ट्रंप ने कसा तंज

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में अगले महीने राष्ट्रपति चुनाव होने वाला है। इस चुनाव को लेकर रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप और डेमोक्रेटिक पार्टी की कमला हैरिस के बीच कांटे की टक्कर है। इस बीच ट्रंप ने ट्रंप ने अमेरिका के सहयोगी देशों को लेकर एक टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि अमेरिका के दुश्मनों से ज्यादा उसके सहयोगियों ने इसका फायदा उठाया है। सहयोगी से उनका मतलब यूरोपीय संघ से है।

ट्रंप ने कहा, हमारे दुश्मनों से ज्यादा सहयोगियों ने हमारा फायदा उठाया। हमारे सहयोगी यूरोपीय संघ है। यूरोपीय संघ के साथ हमारा व्यापार घाटा 300 अरब अमेरिकी डॉलर का है। उन्होंने आगे कहा, हमारे बीच व्यापार सौदे इतने खराब थे कि मैंने पूछा कि वे कौन हैं, जो ऐसा कर रहे हैं। या तो वे बहुत मूर्ख है या फिर उन्हें इसके लिए भुगतान मिल रहा है। ट्रंप ने कहा, मैंने चीन पर 27.5 प्रतिशत का टैरिफ लगाया। अगर ऐसा नहीं करता तो हम चीनी कारों से भर जाते। हमारी सभी फैक्टरियां बंद हो जाती। ऑटो इंडस्ट्री में हमारे पास नौकरी नहीं होती। यह बिजली पर निर्भर करती है, जैसा कि मैंने समझाया। मैंने दक्षिण कोरिया पर टैरिफ लगाया, क्योंकि वे ट्रक से इसे भेज रहे थे। रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार ने आगे कहा, क्या आप जानते हैं कि हमारी कार कंपनियां छोटे ट्रक और एसयूवी से पैसा कमाती है। अगर मैंने टैरिफ हटा दिए तो आप परेशान हो जाएंगे। प्रत्येक कार कंपनी व्यवसाय से बाहर हो जाएगी। पुतिन के साथ अपने संबंधों का किया बचाव रूस को लेकर सवाल किए जाने पर डोनाल्ड ट्रंप ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को लेकर अपने संबंधों का बचाव किया। टैरिफ पर उन्होंने कहा कि भारत एक मजबूत देश है। ट्रंप ने कहा, भारत एक मजबूत देश है। यह केवल चीन नहीं है। मैं कहना चाहूंगा कि चीन बहुत मजबूत देश है। क्या आपको मालूम है कि सबसे कठिन क्या है? यूरोपीय संघ, हमारे खूबसूरत और अद्भुत यूरोपीय देश। अगर आप इन्हें एकसाथ कर लें तो यह बिलकुल हमारे आकार के हैं। वे हमारे साथ बहुत बुरा व्यवहार करते हैं। ट्रंप ने कहा, हम कंपनियों को वापस लाएंगे। हम उन कंपनियों के लिए टैक्स को और कम करने जा रहे हैं जो अमेरिका में अपना उत्पाद बनाने जा रही है। उन्होंने आगे कहा कि वे इन कंपनियों को मजबूत टैरिफ से बचाने जा रहे हैं, क्योंकि वे टैरिफ में विश्वास रखते हैं।

रूस को मदद का आरोप, यूरोप जाने वाली ईरान की इकलौती फ्लाइट पर लगा ब्रेक : मास्को, एजेंसी। ईरान के इजराइल पर हमला करने के बाद से पश्चिमी देश भड़के हुए हैं. इस हमले के बाद अमेरिका और यूरोपीय यूनियन ने ईरान पर लगे प्रतिबंधों का दायरा और बढ़ा दिया है. जिसके बाद ईरान बाहरी दुनिया से और ज्यादा कट गया है. इसके अलावा ये प्रतिबंध यूक्रेन के खिलाफ रूस को मिसाइल देने के आरोप में भी लगाए जा रहे हैं. ईरानी अधिकारियों ने मंगलवार को जानकारी दी कि यूरोपीय संघ के देशों को जाने वाली एकमात्र ईरानी एयरलाइन 'ईरान एयर' ने यूरोपीय संघ की ओर से लगाए गए नए प्रतिबंधों के बाद यूरोप के लिए अपनी सेवाएं निलंबित कर दी हैं. ईरानी एयरलाइंस एसोसिएशन के डायरेक्टर मकसूद असादी समानी ने कहा, ईरान एयर हमारे देश की एकमात्र एयरलाइन थी जो यूरोप के लिए उड़ान भरती थी और ईरान एयर के खिलाफ यूरोपीय संघ के नए प्रतिबंधों को देखते हुए, अब एक भी ईरानी फ्लाइट यूरोप नहीं जा पाएगी।

भारत से लौटते ही मुइज्जू ने बदल डाली सरकार! 7 मंत्रियों-43 उपमंत्रियों को हटाया

माले, एजेंसी। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने भारत से लौटने के बाद अपनी सरकार में बड़ा फेरबदल किया है। भारत से आर्थिक पैकेज लेकर लौटते ही मुइज्जू ने अपनी सरकार के सात राज्य मंत्री, 43 उपमंत्री, 109 वरिष्ठ राजनीतिक निदेशक और 69 राजनीतिक निदेशकों को बाहर का रास्ता दिखा दिया। उनका मानना है कि इससे सरकारी खजाने में बड़ी बचत होगी। इसके पीछे मकसद सरकारी खर्च कम करना है। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने मंगलवार को राजकोषीय और बाहरी असंतुलन को दूर करने, निवेशकों का विश्वास बनाने और मध्यम अवधि में ऋण को कम करने के लिए प्रमुख लागत-कटौती सुधार की घोषणा की। राष्ट्रपति के आधिकारिक एक्स अकाउंट के माध्यम से इस निर्णय को जनता के साथ साझा किया। मुइज्जू ने एक्स पर लिखा, आर्थिक सुधार एजेंडे के भाग के रूप में,

प्रत्यक्ष लागत-कटौती उपाय के रूप में मैंने आज अगले 15 दिनों के भीतर विभिन्न सरकारी मंत्रालयों से 228 राजनीतिक नियुक्तियों को हटाने का निर्देश दिया है। इसमें 7 राज्य मंत्री, 43 उप मंत्री, 109 वरिष्ठ राजनीतिक निदेशक और 69 राजनीतिक निदेशक शामिल हैं। इससे सरकारी बजट से प्रति माह 5।714 मिलियन आरएफ की बचत होगी। तब भारत ने दिया था बड़ा पैकेज वर्ल्ड बैंक ने हाल ही में कहा था कि मालदीव की आर्थिक हालत काफी तेजी से खराब हो रही है। वहां की अर्थव्यवस्था कई तरह की चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे में मालदीव को तुरंत आर्थिक सुधारों की जरूरत है। इसी के बाद मुइज्जू भारत आए और आर्थिक पैकेज की मांग की। भारत ने उन्हें 400 मिलियन डॉलर का पैकेज दिया है। भारत से लौटने के बाद मुइज्जू आर्थिक हालात को सुधारने के लिए लगातार कड़े फैसले ले रहे हैं। सरकारी मंत्रालयों, राष्ट्रपति कार्यालय, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति निवास में काम करने वालों की संख्या में कटौती की गई है। कर्ज के बोझ तले डूबा मालदीव मालदीव बजट घाटे और कर्ज के बोझ से जूझ रहा है। विदेशी मुद्रा भंडार 440 मिलियन डॉलर तक गिर जाने के कारण उसे कर्ज चुकाने में दिक्कत हो रही है। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन के कार्यकाल के दौरान मालदीव ने चीन से भारी उधार लिया था। अभी भी चीन का मालदीव पर 1।37 बिलियन डॉलर बकाया है। मालदीव को पता है कि उसे सिर्फ भारत ही इस मामले में मदद कर सकता है।

हिजबुल्ला ने इस्राइल पर दागे 50 से ज्यादा रॉकेट; अमेरिका ने दी हथियारों की सप्लाई रोकने की धमकी

तेल अवीव, एजेंसी। इस्राइली सेना ने कहा है कि लेबनान की तरफ से बीती रात उनके साफेद इलाके में 50 से ज्यादा रॉकेट्स दागे। हालांकि इन हमलों में किसी बड़े नुकसान की खबर नहीं है। इस्राइली सेना ने बताया कि देर रात करीब 1.40 बजे के करीब लेबनान की तरफ से हमला हुआ। हालांकि अधिकतर रॉकेट को इस्राइल की हवाई सुरक्षा द्वारा हवा में ही तबाह कर दिया गया। कुछ रॉकेट रिहायशी इलाकों में गिरे, लेकिन उनसे भी कुछ खास नुकसान नहीं हुआ। हिजबुल्ला ने एक बयान जारी कर इस हमले की जिम्मेदारी ली है।

आतंकी हमले में एक पुलिसकर्मी की मौत : इस्राइल के तटीय शहर अशोद में मंगलवार को हुए एक आतंकी हमले में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई और चार अन्य लोग घायल हो गए। दरअसल मंगलवार को एक आतंकी ने लोगों पर अचानक गोलीबारी शुरू कर दी। इस गोलीबारी में फर्स्ट सार्जेंट आदिर कदोश (33) गंभीर रूप से घायल हो गए और अस्पताल ले जाते हुए उनकी मौत हो गई। आतंकी की पहचान 28 साल के मोहम्मद दारदौना के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि आतंकी गाजा के जाबालिया का निवासी था और फिलहाल वेस्ट बैंक में रह रहा था। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, आरोपी पैदल ही इस्राइली इलाके में दाखिल हुआ और जब पुलिस ने उसे देखकर रुकने का इशारा किया तो उसने पुलिस पर फायरिंग कर दी।

एक एंबुलेंस ड्राइवर ने आतंकी को गोली मार दी।

अमेरिका ने इस्राइल को दी चेतावनी : व्हाइट हाउस ने इस्राइल को चेतावनी दी है कि अगर एक महीने में गाजा में मानवीय मदद को बेहतर नहीं किया गया तो वह इस्राइल को हथियारों की सप्लाई रोक देंगे। अमेरिका ने कहा कि हाल के महीनों में गाजा में भेजी जा रही मानवीय मदद में कमी आई है। इस्राइली मीडिया के अनुसार, अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने इस्राइल की सरकार को एक चिट्ठी लिखी है, जिसमें बीते कुछ महीनों में गाजा पट्टी में भेजी जा रही राहत सामग्री में कमी को लेकर नाराजगी जताई गई है।

बिलावल भुट्टो ने की भारत-पाकिस्तान वार्ता की वकालत

इस्लामाबाद, एजेंसी। विदेश मंत्री एस जयशंकर शंघाई आयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए इन दिनों पाकिस्तान की यात्रा पर हैं। इस बीच पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी ने भारत के साथ द्विपक्षीय वार्ता की वकालत की है। भारत ने इस्लामाबाद में चल रहे एससीओ शिखर सम्मेलन के दौरान ऐसी किसी संभावना से इनकार किया है। एआरवाई न्यूज को दिए एक इंटरव्यू में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के अध्यक्ष ने दोनों देशों से एससीओ बैठक के दौरान बातचीत करने का आग्रह किया है।

उन्होंने सवाल किया, इतना कठोर क्यों होना चाहिए? दोनों देशों को शिखर सम्मेलन के दौरान द्विपक्षीय वार्ता करने के बारे में सोचना चाहिए। आज हो या कल, दोनों देशों को जल्द द्विपक्षीय वार्ता फिर से शुरू करनी होगी। आपको बता दें कि भारत ने पाकिस्तान द्वारा सीमा पार आतंकवाद की समस्या को हल किए बिना किसी भी तरह की वार्ता से साफ इनकार कर दिया है।

मंगलवार को पाकिस्तान के पूर्व अंतरिम प्रधानमंत्री अनवार-उल-हक काकर ने कहा कि भारत के साथ अपने संबंधों में सुधार देखने के लिए पाकिस्तान में गहरी इच्छा है। काकर ने कहा कि पाकिस्तान की सेना, राजनीतिक दल और देश के कई अन्य वर्ग नई दिल्ली और इस्लामाबाद के बीच संबंधों में आगे की गति चाहते हैं। हालांकि, इसकी जमीनी हकीकत का एहसास भी जरूरी है। भारतीय मीडिया के द्वारा पूछे गए एक सवाल

का जवाब देते हुए उन्होंने कहा, मुझे नहीं लगता कि द्विपक्षीय संबंधों में कोई सफलता मिलने की कोई उम्मीद है।

उनसे पूछा गया कि अगर पाकिस्तान द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाना चाहता है तो उसने दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के बीच बैठक का प्रस्ताव क्यों नहीं रखा। इसके जवाब में काकर ने कहा कि अगर ऐसा कोई कदम उठाया जाता है तो पाकिस्तान के विपक्षी दलों की आलोचना का सामना करने से भी आशंकित है। उन्होंने कहा कि अगर वर्तमान राजनीतिक माहौल में कोई भी एक इंच भी पीछे हटता है, तो उसका खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। काकर ने पाकिस्तान और भारत के बीच संबंधों में सुधार की जोरदार वकालत करते हुए कहा कि दोनों पक्षों को इसके लिए तरीके खोजने चाहिए। आपको बता दें कि विदेश मंत्री एस जयशंकर बुधवार को एससीओ काउंसिल ऑफ हेड्स ऑफ गवर्नमेंट (सीएचजी) शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे।

भारत-पाकिस्तान के संबंध : भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध तब गंभीर तनाव में आ गए थे जब फरवरी 2019 में पुलवामा आतंकी हमले के जवाब में भारत के लड़ाकू विमानों ने पाकिस्तान के बालाकोट में जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर पर हमला किया था। 5 अगस्त 2019 को भारत द्वारा जम्मू-कश्मीर की विशेष शक्तियों को वापस लेने और राज्य को दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित करने की घोषणा के बाद संबंध और भी खराब हो गए।

पीएम मोदी के साथ एनडीए के सीएम और डिप्टी सीएम की बैठक

मोदी बोले- हमारा गठबंधन देश को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध

बैठक में एनडीए शासित राज्यों के 17 सीएम और 18 डिप्टी सीएम ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि मीटिंग में 6 प्रस्तावों पर चर्चा की गई और उन्हें पारित किया गया

एजेंसी ▶▶ चंडीगढ़

चंडीगढ़ में गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में एनडीए के मुख्यमंत्रियों और उपमुख्यमंत्रियों की बैठक हुई। इस बैठक में वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा भी शामिल हुए। बैठक को लेकर पीएम मोदी ने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि हमने सुशासन के पहलुओं और लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के तरीकों पर व्यापक चर्चा की। हमारा गठबंधन राष्ट्रीय प्रगति को आगे बढ़ाने और गरीबों तथा वंचितों को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। बैठक में एनडीए शासित राज्यों के 17 सीएम और 18 डिप्टी सीएम ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि मीटिंग में 6 प्रस्तावों पर चर्चा की गई और उन्हें पारित किया गया।

2025 में 'संविधान का अमृत महोत्सव' मनाने का प्रस्ताव

जेपी नड्डा ने आगे कहा कि पहला प्रस्ताव महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे ने पीएम की नीतियों के कारण हरियाणा में पार्टी की जीत पर रखा। हरियाणा में भाजपा को किसानों, युवाओं और एथलीटों का समर्थन मिला। इसके लिए पीएम को धन्यवाद दिया गया और प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया गया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की तरफ से 2025 में 'संविधान का अमृत महोत्सव' मनाने का एक और प्रस्ताव रखा गया।

अजित पवार ने बैठक को बताया सफल

वहीं महाराष्ट्र में आगामी विधानसभा चुनाव और मुख्यमंत्रियों की परिषद एनडीए की बैठक पर महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने कहा कि हमें पूरा भरोसा है, हमने अच्छा काम किया है। हमारी बैठक बहुत अच्छी रही। पीएम ने 4 घंटे का समय दिया और सबकी बात सुनी, उन्होंने जो मन में था वो भी बोला, अब सब उसी के अनुसार काम करेंगे।

शासन के माध्यम से लोगों की समस्याओं का समाधान- नड्डा

मुख्यमंत्रियों की एनडीए बैठक के खत्म होने के बाद भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा, पीएम ने जोर दिया कि शासन के माध्यम से लोगों की समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए। पीएम ने कहा कि हमें 'प्रो-पीपुल्स, प्रो-गवर्नेंस- पी2जी2' पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और इसे आगे बढ़ाना चाहिए।

खबर संक्षेप

कार्ति चिदंबरम के खिलाफ सीबीआई का आरोप पत्र

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने कांग्रेस सांसद कार्ति

चिदंबरम और अन्य के खिलाफ 2011 में एक बिजली कंपनी के लिए चीनी नागरिकों को वीजा दिलाने में कथित रिश्वतखोरी के संबंध में आरोप पत्र दायर किया है। उस समय उनके पिता पी. चिदंबरम केंद्रीय गृह मंत्री थे। यहां एक विशेष अदालत के समक्ष पेश आरोपपत्र में सीबीआई ने शिवगंगा लोकसभा सीट से सांसद कार्ति चिदंबरम, उनके कथित करीबी सहयोगी का नाम लिया है, जिसके जरिए रिश्वत दी गई थी।

सीआरपीएफ के 12 कर्मी घायल

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के बडगाम जिले में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) का एक वाहन सड़क से फिसलकर खाई में गिर गया और इस हादसे में 12 जवान घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि मध्य कश्मीर जिले के खैगाम इलाके में यह दुर्घटना हुई। उन्होंने बताया कि इस हादसे में घायल हुए सीआरपीएफ के कर्मियों को इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

सुप्रीम कोर्ट में लगाई याचिका

दो महीने में जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा मिले

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट में जम्मू कश्मीर के राज्य का दर्जा बहाल किए जाने की समयसीमा तय करने का अनुरोध से जुड़ी याचिका दायर की गई है। एडवोकेट गोपाल शंकर नारायण ने जहूर अहमद भट और खुर्शीद अहमद मलिक की ओर से यह याचिका लगाई है। वकील गो पा ल शंकरनारायण ने मामले को तत्काल सूचीबद्ध करने के लिए आवेदन का उल्लेख किया। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि वह मामले को सूचीबद्ध करेगी। याचिका में कहा गया है कि अनुच्छेद 370 पर सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने जम्मू-कश्मीर को जल्द ही पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने का आश्वासन दिया था। हालांकि मामले में फैसला आने के 10 महीने बाद भी केंद्र सरकार ने अब तक इस पर कोई कदम नहीं उठाया।

यूटी बनाने का कदम अस्थायी है

केंद्र सरकार ने 5 अगस्त, 2019 को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के साथ ही प्रदेश का पूर्ण राज्य का दर्जा खत्म करते हुए उसे दो यूनियन टेरिटरी (जम्मू-कश्मीर और लद्दाख) में बांट दिया था। इस फैसले के खिलाफ दाखिल 23 याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई थी। 29 अगस्त, 2023 को आर्टिकल 370 खत्म करने के खिलाफ याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से कहा था कि राज्य को दो अलग यूनियन टेरिटरी में बांटने का कदम अस्थायी है। लद्दाख यूनियन टेरिटरी ही रहेगा, लेकिन जम्मू-कश्मीर को जल्द ही फिर से राज्य बना दिया जाएगा।

अनुच्छेद 370 खत्म करने के खिलाफ रहे जहूर भट

याचिकाकर्ता जहूर अहमद भट ने अनुच्छेद 370 खत्म करने के खिलाफ भी सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। सुनवाई के दौरान 23 अगस्त, 2023 को भट ने कोर्ट के सामने अपनी दलीलें दी थीं। इसके दो दिन बाद 25 अक्टूबर को उन्हें सस्पेंड कर दिया गया था। मामले की सुनवाई कर रही पांच जजों की बेंच ने इस पर चिंता जताते हुए कहा था कि कहीं जहूर से बदला लेने की नीयत से तो ऐसा नहीं किया गया है। इस पर पेश सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि जहूर को सस्पेंड किए जाने का जरूर कोई और कारण होगा। उनके साथ कुछ और मुद्दे भी हैं। तब सीजेआई ने कहा अगर कोई और वजह है तो अलग बात है। लेकिन, उनकी कोर्ट में पेशी और उनके सस्पेंशन के बीच समय का ज्यादा फर्क नहीं है।

कनाडा के पीएम ट्रूडो को विदेश मंत्रालय की खरी-खरी

सबूत न देकर सिर्फ गंभीर आरोप लगा रहे भारत की ओर से 26 प्रत्यर्पण अनुरोध पेंडिंग

▶▶ नई दिल्ली

जायसवाल ने कहा कि कनाडा में जारी भारत विरोधी गतिविधियों, खालिस्तानी चरमपंथियों और भारत को तोड़ने वाली अलगाववादी सोच को मिल रहे समर्थन के खिलाफ भारत की कार्रवाई के पक्ष के संबंध में उनके शब्दों और कार्रवाई के बीच का अंतर साफ नजर आता है

कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो द्वारा हाल ही में जांच आयोग के समक्ष आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारतीय राजनयिकों की संलिप्तता और लॉरेंस बिश्नोई गैंग के उनके देश में हिंसा फैलाने के आरोपों पर भारत ने गुरुवार को बेहद सख्त अंदाज में कनाडा को जमकर खरी खोटी सुनाई। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि भारतीय राजनयिकों पर लगाए गए कनाडा के आरोपों को भारत सिरे से खारिज करता है। यह पूरी तरह से आधारहीन और तथ्यों से परे हैं। उन्होंने हमारी चिंताओं पर कोई कार्रवाई नहीं की है। जिसके पीछे कुछ राजनीतिक कारण भी हैं। हमने पिछले साल हुई निज्जर की हत्या के बाद से मामले पर कनाडा से पुख्ता साक्ष्य देने की मांग की है। लेकिन आज तक उन्होंने कोई ठोस सबूत भारत को नहीं दिया है। इसकी पुष्टि जांच आयोग के सामने खुद कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो ने की है। जिसमें उन्होंने कहा है कि इस संबंध में 2023 में कनाडा ने भारत से कोई सबूत नहीं बल्कि सिर्फ खुफिया जानकारी ही साझा की थी।

ये भी कहा

कनाडा अलगाववादी ताकतों के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रहा

लॉरेंस बिश्नोई गैंग के लोगों को गिरफ्तार करने की मांग की थी

रॉयल कैनेडियन पुलिस की बातें विरोधाभासी

लॉरेंस बिश्नोई गैंग को लेकर जायसवाल ने कहा, आतंकवाद या उससे जुड़े मामलों में अपराधियों के प्रत्यर्पण को लेकर कनाडा में भारत के कुल 26 आवेदन लंबित हैं। निज्जर इसमें शामिल नहीं है, उस पर किसी और मामले में आरोप लगे होंगे। प्रत्यर्पण के ये आवेदन बीते एक दशक से अधिक समय के दौरान नई दिल्ली द्वारा किए गए हैं। लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि यह काफी गंभीर है कि हमने लोगों को प्रत्यर्पित करने और कार्रवाई करने के लिए कहा। लेकिन रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस भारत पर आरोप लगा रही है कि ये लोग उनके देश में अपराध कर रहे हैं। जिससे इसमें विरोधाभास नजर आता है। भारत ने कुछ आवेदन आपसी कानूनी सहायता संधि के तहत किए हैं।

भारतीयों की सुरक्षा कनाडा की जिम्मेदारी

उन्होंने कहा कि वर्तमान में कनाडा में भारतीयों की तादाद करीब 18 लाख (बड़ी तादाद में छात्र शामिल) है। यह दोनों देशों के संबंधों के बीच में काफी अहम पुल की तरह हैं। लेकिन इनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी पूरी तरह से कनाडा सरकार की है। वीजा को लेकर वहां हालात ठीक नहीं हैं, जिसके लिए ट्रूडो सरकार जिम्मेदार है। वीजा पर कोई रोक नहीं है। भारत के जो लोग उच्चायोग में बाकी बचे हुए हैं वो वीजा प्रक्रिया को संचालित करेंगे।

ट्रूडो के शब्दों, कार्रवाई में अंतर

पीएम ट्रूडो के वन इंडिया नीति पर विश्वास को लेकर जायसवाल ने कहा कि वहां जारी भारत विरोधी गतिविधियों, खालिस्तानी चरमपंथियों और भारत को तोड़ने वाली अलगाववादी सोच को मिल रहे समर्थन के खिलाफ भारत की कार्रवाई के पक्ष के संबंध में उनके शब्दों और कार्रवाई के बीच का अंतर साफ नजर आता है। फाइव आइज देशों का कानून के शासन को लेकर आए बयान पर कहा कि हमने उन्हें अपनी स्थिति बिलकुल साफ कर दी है।

लापरवाह व्यवहार के जिम्मेदार ट्रूडो

जायसवाल ने कहा कि कनाडा के प्रधानमंत्री के आयोग के समक्ष की गई स्वीकारोक्ति हमारे द्वारा लगातार दिए जा रहे बयानों की पुष्टि करती है। जिसमें हमने कहा है कि कनाडा ने भारत और उसके राजनयिकों पर लगाए गए गंभीर आरोपों के जवाब में आज तक हमें कोई ठोस सबूत नहीं दिया है। इससे दोनों देशों के संबंधों को हुए नुकसान की जिम्मेदारी पूरी तरह से प्रधानमंत्री ट्रूडो पर आती है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता जायसवाल का खुलासा

बेहद कम समय में नई दिल्ली पहुंची थीं शेख हसीना, सीमित वीजा दे रहे

▶▶ नई दिल्ली

बांग्लादेश की अपदस्थ पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की

गिरफ्तारी को लेकर ढाका प्रशासन द्वारा जारी किए गए एक हालिया आदेश पर गुरुवार को भारत के विदेश मंत्रालय की प्रतिक्रिया सामने आई। जिसमें मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि इस संबंध में हमने हाल ही में आई कुछ रिपोर्ट देखी हैं। लेकिन मैं इन पर कुछ नहीं कहूंगा। हां, उनके यहां आने पर यह कहना चाहूंगा कि वो बेहद छोटी अवधि में भारत आई थीं। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में रह रहे भारतीयों को हमारे उच्चायोग द्वारा चिकित्सा या आपात परिस्थितियों के तहत फिलहाल सीमित वीजा ही दिया जा रहा है। वहां पर कानून व्यवस्था की स्थिति में सुधार के बाद ही वीजा आपरेशन पूरी तरह से बहाल किया जाएगा। जहां तक बांग्लादेश में हिंदू या अन्य अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों व उनकी सुरक्षा का सवाल है तो मैं यह कहूंगा कि हमने इनके संबंध में कुछ बयान जारी किए हैं।

विशेष अभियान 4.0 के तहत दर्ज की प्रगति

कोयला मंत्रालय ने सौर ऊर्जा अपशिष्ट प्रबंधन में निभाई महत्वपूर्ण भूमिका

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

कोयला मंत्रालय अपने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) के साथ 2 से 31 अक्टूबर 2024 के मध्य विशेष अभियान 4.0 के तहत अहम प्रगति दर्ज की। अब तक 62,08,064 वर्ग फुट के लक्ष्य के अनुपात में 211 स्थानों पर 13,01,043 वर्ग फुट स्थान स्वच्छ किया गया। 8,286 एमटी स्क्रैप के लक्ष्य के अनुपात में 3,516 एमटी स्क्रैप समाप्त किया गया, जिससे 83,709,707 रुपए का राजस्व अर्जित हुआ। इसके साथ ही 15,322 भौतिक और इलेक्ट्रानिक फाइलों की समीक्षा की गई और 5,253 फाइलों को हटाया व बंद किया गया।

तीन सौर वृक्ष लगाए

केंद्रीय कोयला और खनन राज्यमंत्री सतीश चंद्र दुबे ने पीएम सौर घर योजना के अंतर्गत सीएमपीडीआईएल परिसर में तीन सौर वृक्षों (3X5 किलोवॉट) का उद्घाटन किया। इस पहल का उद्देश्य कार्यालय और आवासीय भवनों में ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति के लिए सौर शक्ति का लाभ उठाना है। ये सौर वृक्ष ऊर्जा आत्मनिर्भरता और पर्यावरणीय नेतृत्व के प्रति अहम चरण को प्रदर्शित करते हैं। सीएमपीडीआईएल कार्बन फुट प्रिंट कम करने और दीर्घकालिक भविष्य को प्रोत्साहन देने के लिए एक उदाहरण प्रदर्शित कर रहा है।

पब्लिक पोस्ट देख सकेगा ब्लॉक व्यक्ति

नई दिल्ली। एलन मस्क के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स की पॉलिसी

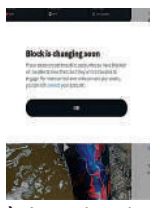

बदली है। ब्लॉक को लेकर आ रहे नोटिफिकेशन में लिखा है कि यदि आपका पोस्ट पब्लिक है तो आपने जिसे ब्लॉक किया है वह आपके पब्लिक पोस्ट को देख सकेगा, लेकिन वह आपसे बातें नहीं कर सकेगा यानी रिप्लाई या शेयर नहीं कर पाएगा। प्रोटेक्ट योर अकाउंट में जाकर आप अपने अकाउंट को कंट्रोल कर सकते हैं। मस्क का मानना है कि लोग दूसरा अकाउंट बनाकर लोगों की प्रोफाइल देख रहे हैं तो फिर क्यों न एक फीचर ही दे दिया जाए।

'सागर कवच' अभ्यास शुरू

समुद्रतटीय हितों की रक्षा करने के लिए एकजुट हुई एजेंसियां

एजेंसी ▶▶ पणजी

भारतीय तटरक्षक बल ने देश के समुद्रतटीय हितों की रक्षा करने और सुरक्षा खतरों को लेकर एजेंसियों की सामूहिक प्रतिक्रिया का परीक्षण करने के लिए अन्य एजेंसियों के साथ समन्वय स्थापित कर गोवा और महाराष्ट्र के तट पर एक अभ्यास किया है।

तटरक्षक बल ने एक विज्ञप्ति में बताया कि दो दिवसीय 'सागर कवच' तटीय सुरक्षा अभ्यास बुधवार को शुरू हुआ। तटरक्षक बल यहां भारतीय नौसेना, सीमा शुल्क, तटीय पुलिस, केंद्रीय

औद्योगिक सुरक्षा बल, मोरमुगाओ बंदरगाह प्राधिकरण और गोवा सरकार के मत्स्य पालन तथा बंदरगाह विभागों के कैप्टन के साथ समन्वय स्थापित कर यह अभ्यास कर रहा है।

दोनों देशों के बीच क्रिकेट संबंधों की कोई बहाली नहीं

पाक संग जयशंकर की नहीं हुई कोई द्विपक्षीय बैठकः जायसवाल

▶▶ नई दिल्ली

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर के बीते बुधवार को समाप्त हुए पाकिस्तान के दो दिवसीय दौरे के बाद दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों और खासतौर पर क्रिकेट संबंधों की बहाली को लेकर मीडिया के एक धड़े में प्रकाशित और प्रसारित की गई खबरों पर गुरुवार को विदेश मंत्रालय ने भारत की आधिकारिक स्थिति को पूरी तरह से साफ कर दिया है।

मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने साप्ताहिक मीडिया ब्रीफिंग में कहा कि विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर की पाकिस्तान की हालिया यात्रा का उद्देश्य केवल शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के राष्ट्राध्यक्षों की बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व करना था। इस दौरान मंगोलिया को छोड़कर किसी अन्य देश के साथ कोई द्विपक्षीय

बैठक नहीं हुई है। जबकि क्रिकेट को लेकर भी भारत और पाक के बीच कोई संबंध बहाली नहीं हुई है। मामले में मीडिया में जारी खबरें गलत हैं। विदेश मंत्री की पाकिस्तान यात्रा के दौरान विदेश मंत्रालय ने एक बयान भी जारी किया था।

भोजन पर पूरी की शिष्टाचार औपचारिकताएं

रणधीर जायसवाल ने कहा, जहां तक पाकिस्तान में एससीओ की बैठक के आयोजन के दौरान दोपहर और रात्रिभोज में विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर की पाकिस्तानी पक्ष से बातचीत या मुलाकात का सवाल है तो मैं कहना चाहता हूं कि इस दौरान विदेश मंत्री द्वारा कुछ शिष्टाचार औपचारिकताएं पूरी की गई थीं। इसके अलावा पाकिस्तानी पक्ष के साथ कोई बातचीत नहीं हुई। उन्होंने कहा, मैं विदेश मंत्री की पाक यात्रा और उसके बाद दोनों देशों के संबंधों को लेकर पूछे गए प्रश्नों के जवाब में यही कहूंगा।

पुंछ और राजौरी में आतंकियों की तलाश कर रही सेना

एजेंसी ▶▶ मेंढर

जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती जिले पुंछ और राजौरी के विभिन्न स्थानों पर आतंकवादियों को पकड़ने के लिए

सुरक्षाबलों का व्यापक तलाशी अभियान जारी है। अधिकारियों ने बताया कि कुछ आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद गुरसाई टॉप इलाके के मोहरी शाहस्तर में पुलिस और सेना ने बुधवार देर रात संयुक्त रूप से तलाशी अभियान शुरू किया। उन्होंने बताया कि सुरक्षा बलों ने जंगल की ओर बढ़ रहे आतंकवादियों को ललकारा, जिसके बाद उनके बीच कुछ देर तक गोलीबारी हुई। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों की तलाश के लिए अतिरिक्त बल भेजा गया है और व्यापक तलाशी अभियान जारी है। उन्होंने बताया कि सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों का पता लगाने के लिए ड्रोन और खोजी कुत्तों को भी तैनात किया है।

अमेरिका का हूती विद्रोहियों पर हमला

पहली बार बी-2 बॉम्बर विमान से यमन में घातक हथियारों के 5 डिपो किए तबाह

एजेंसी ▶▶ वॉशिंगटन

अमेरिकी एयर फोर्स ने बुधवार रात यमन में हूती विद्रोहियों के ठिकानों पर बमबारी की। अलजजीरा ने अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन के हवाले से बताया कि बी-2 स्टील्थ बॉम्बर से यमन की राजधानी सना के नजदीक 5 ठिकानों पर पर सटीक हमला हुआ। ऑस्टिन ने कहा कि जमीन के भीतर हूती विद्रोहियों ने घातक हथियार छुपा रखे थे। इसका इस्तेमाल वे दूसरे देशों पर हमला करने और लाल सागर और अदन की खाड़ी में

जहाजों को निशाना बनाने के लिए करते थे। अमेरिकी रक्षा मंत्री ने कहा कि ये हमले राष्ट्रपति जो बाइडेन के निर्देश पर किए गए।

हूती विद्रोहियों ने की पुष्टि

हूती विद्रोहियों ने भी इस हमले की पुष्टि की है। हालांकि इसमें कितना नुकसान हुआ है इस बारे में उन्होंने जानकारी नहीं दी। हूती के डिप्टी हेड नसरुद्दीन आमेर ने कहा कि अमेरिका को इसकी कीमत चुकानी होगी। ये पहली बार है जब अमेरिका ने यमन में बी-2 बॉम्बर का इस्तेमाल किया है। इसके पहले अमेरिकी सेना यमन में फाइटर जेट का इस्तेमाल करती रही है।

टेस्ट : भारत ने बनाया एशिया में सबसे छोटा टेस्ट स्कोर

शर्मनाक! भारतीय टीम 46 रन पर ढेर 5 बैटर्स '0', कीवियों की लीड 130 पार

एजेंसी ▶▶| बेंगलुरु

भारतीय टीम ने गुरुवार को बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम पर चल रहे पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड के सामने घुटने टेक दिए। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया, जो दांव पूरी तरह उलटा पड़ गया। भारतीय टीम केवल 46 रन पर ऑलआउट हो गई। मेजबान टीम के पांच बल्लेबाज तो खाता भी नहीं खोल सके। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाजों मैट हेनरी (5 विकेट) और विलियम ओ रुड़की (4 विकेट) ने भारतीय बल्लेबाजी क्रम की कमर तोड़ दी। न्यूजीलैंड ने गेंदबाजी आक्रमण में केवल तीन गेंदबाजों का उपयोग किया और 31.2 ओवर में भारत को समेट दिया। 46 रन पर ऑलआउट होते ही भारतीय टीम के नाम शर्मनाक रिकॉर्ड दर्ज हो गया। भारतीय टीम अपने घर में सबसे कम स्कोर पर ऑलआउट हुई। इसके अलावा भारतीय टीम ने एशिया में सबसे कम स्कोर पर ऑलआउट होने का धब्बा भी अपने ऊपर लगा लिया। वैसे, टीम इंडिया ने अपने टेस्ट इतिहास का तीसरा सबसे छोटा स्कोर बनाया। जवाब में न्यूजीलैंड ने स्टंप तक तीन विकेट के नुकसान पर 180 रन बनाकर 134 रन की लीड बना ली है।

0 विराट कोहली
भारत के जब 9 रन बने थे उस वक्त विराट कोहली लेग स्लिप में अपना कैच थमा बैठे। किंग कोहली इस दौरान 9 गेंद पर बिना खाता खोले ही पवेलियन लौटे। वह 38वीं बार डक पर आउट हुए

0 सरफराज खान
पारी के 10वें ओवर की चौथी गेंद पर सरफराज खान शून्य पर आउट हुए। मैट हेनरी ने उन्हें कॉन्वे के हाथों कैच आउट कराया। शॉट खेलने के चक्कर में अपना विकेट गंवा बैठे।

0 केएल राहुल
23वें ओवर की चौथी गेंद पर केएल राहुल शून्य पर आउट हुए। 6 गेंदों का सामना करने के बावजूद केएल भी अपना खाता नहीं खोल पाए। ओरूर्क ने उन्हें स्टंप आउट कराया।

0 रवींद्र जडेजा
रवींद्र जडेजा इसके बाद 24वें ओवर की पांचवीं गेंद पर मैट हेनरी का शिकार बने और एजाज पटेल ने उनका कैच लपका।

0 आर अश्विन
आर अश्विन जब लंच ब्रेक के बाद आए तो पहली ही गेंद पर वह गोल्डन डक हो गए। अश्विन 1 गेंद का सामना करते हुए पवेलियन लौटे।

कोहली ने खेला 536वां मैच
भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली गुरुवार को तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे, लेकिन वह बिना खाता खोले पवेलियन लौट गए। मगर कोहली ने इसके बावजूद एमएस धोनी का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। कोहली ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर का 536वां मैच खेला। एमएस धोनी ने कुल 535 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले थे। बता दें कि भारत की तरफ से सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने का रिकॉर्ड महान सचिन तेंदुलकर के नाम दर्ज है। मास्टर ब्लास्टर ने 664 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले।

रोहित ने बल्लेबाजी चुन किया ब्लंडर
बेंगलुरु की चिन्नास्वामी स्टेडियम में जिस तरह भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया उसने काफी चौंका दिया, क्योंकि मैच का पहला दनि बारिश के कारण धुल गया था। इस कारण पूरे समय मैदान पर कवर मौजूद थे। ऐसे में माना जा रहा था कि जो भी कप्तान टॉस जीतेगा पहले गेंदबाजी करने का फैसला करेगा। क्योंकि कंडीशन तेज गेंदबाजों के लिए मददगार दिख रही थीं। ऐसा माना जा रहा था कि रोहित शर्मा अगर टॉस जीते हैं तो पहले गेंदबाजी करने का फैसला करेंगे लेकिन वह टॉस जीते और उन्होंने पहले बल्लेबाजी चुन ली और उनका यह फैसला बैकफायर कर गया।

भारत को झटका, पंत का दायां घुटना फिर चोटिल
भारतीय टीम के बल्लेबाज ऋषभ पंत विकेटकीपिंग करते वक्त गेंद लगने से चोटिल हो गए जिस कारण उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा। जडेजा की गेंद स्टंप्स से मिस होती हुई पंत के पैर में लगी और वह दर्द में दिखे। पंत के दाएं पैर में चोट लगी है। यह वही पैर है जिसमें कार दुर्घटना में उन्हें चोट लगी थी और इसकी वजह से वह डेढ़ साल क्रिकेट से दूर रहे थे। यह घटना न्यूजीलैंड की पारी के 37वें ओवर की है। रोहित ने जल्दी फीजियो को बुलाया और फीजियो ने उनकी मरहम पट्टी करने की कोशिश की। हालांकि, इससे पंत को राहत नहीं मिला। फिर फीजियो उन्हें मैदान से बाहर ले गए। तब पंत चलते हुए काफी दर्द में दिख रहे थे। इसके बाद बाउंड्री लाइन पर उनके लिए चेयर लगाया गया।

13 विकेट एक दिन में गिरे
एक दिन का खेल बाधित होने के बावजूद दूसरे दिन गुरुवार को मैच में कुल 13 विकेट गिरे। मैट हेनरी और विलियमस ओरुर्के ने शानदार गेंदबाजी की और भारत को पहली पारी में 50 रन से भी कम के स्कोर पर ढेर किया। हेनरी ने पहली पारी में पांच विकेट लिए, जबकि ओरुर्के ने चार विकेट झटके।

एशिया में सबसे कम स्कोर

रन	देश	खिलाफ़	वर्ष
46	भारत	न्यूजीलैंड	2024
53	वेस्टइंडीज	पाकिस्तान	1986
53	पाकिस्तान	ऑस्ट्रेलिया	2002
59	पाकिस्तान	ऑस्ट्रेलिया	2002

भारत का सबसे कम स्कोर

रन	देश	खिलाफ़	वर्ष
36	भारत	ऑस्ट्रेलिया	2020
42	भारत	इंग्लैंड	1974
46	भारत	न्यूजीलैंड	2024
58	भारत	ऑस्ट्रेलिया	1947
58	भारत	इंग्लैंड	1952

स्कोर बोर्ड

भारत पहली पारी	रन	गेंद	4	6
यशस्वी का पटेल बो ओ राउरकी	13	63	1	0
रोहित शर्मा बो साउदी	02	16	0	0
कोहली का फिलिप्स बो ओ राउरकी	00	09	0	0
सरफराज का कॉवे बो हेनरी	00	03	0	0
ऋषभ पंत का लाथम बो हेनरी	20	49	2	0
राहुल का ब्लंडेल बो ओ राउरकी	00	06	0	0
रविंद्र जडेजा का पटेल बो हेनरी	00	06	0	0
अश्विन का फिलिप्स बो हेनरी	00	01	0	0
कुलदीप का ब्रासवेल बो हेनरी	02	17	0	0
बुमराह का हेनरी बो ओ राउरकी	01	03	0	0
मोहम्मद सिराज नाबाद	04	16	1	0

अतिरिक्त : 04, कुल : 31.2 ओवर में 46/10
गेंदबाजी : साउदी 6-4-8-1, हेनरी 13.2-3-15-5, ओ राउरकी 12-6-22-4.

खबर संक्षेप

न्यूजीलैंड का सामना वेस्टइंडीज से आज
शारजाह। न्यूजीलैंड टीम महिला टी20 विश्व कप सेमीफाइनल में शुक्रवार को जब आत्मविश्वास से ओतप्रोत वेस्टइंडीज से खेलेगी तो उसका इरादा अपना शानदार फॉर्म बरकरार रखने का होगा। न्यूजीलैंड ने इस टूर्नामेंट में भारत और श्रीलंका जैसी टीमों को हराकर ग्रुप ए से अंतिम चार में जगह बनाई। टूर्नामेंट से पहले दस मुकाबले हारी टीम ने जबर्दस्त खेल का प्रदर्शन किया। वेस्टइंडीज ने इंग्लैंड को पिछले मैच में हराया था। ग्रुप बी में शीर्ष पर रही कैरेबियाई टीम ने एक ही मैच गंवाया।

सनराइजर्स के गेंदबाजी कोच का पद छोड़ेंगे स्टेन

मुंबई। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज डेल स्टेन ने पुष्टि की है कि वह इंडियन प्रीमियर लीग के अगले सत्र में सनराइजर्स हैदराबाद के गेंदबाजी कोच नहीं होंगे। वह एसए 20 लीग में सनराइजर्स की दूसरी टीम सनराइजर्स ईस्टर्न कैप के साथ बने रहेंगे जिसने पहले दोनों सत्र में खिताब जीता है। स्टेन ने एक्स पर लिखा, 'क्रिकेट से जुड़ी एक घोषणा। सनराइजर्स हैदराबाद को धन्यवाद जिसके साथ मैं आईपीएल में गेंदबाजी कोच रहा। दुर्भाग्य की बात है कि अब मैं आईपीएल 2025 के लिए नहीं लौटूंगा।'

राष्ट्रीय रैंकिंग चैंपियनशिप में खेलेंगे शीर्ष खिलाड़ी

मडगांव। भारत के शीर्ष टेबल टेनिस खिलाड़ी शुक्रवार से यहां शुरू हो रही सत्र की दूसरी यूटीटी राष्ट्रीय रैंकिंग टेबल टेनिस चैम्पियनशिप में हिस्सा लेंगे जिसमें मानव ठक्कर, जी साथियान, अहयिका मुखर्जी और सुतिर्था मुखर्जी शामिल हैं। सीनियर पुरुष वर्ग में शीर्ष वरीय ठक्कर, साथियान और मानुष शाह के साथ मिलकर अगुआई करेंगे। ठक्कर ने हाल में अस्ताना एशियाई चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन किया था। वहीं अचिंता शरत कमल और हरमीत देसाई दोनों ने प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं लेने का फैसला किया है।

डेनमार्क ओपन: सिंधू की युई पर आठ मैचों में सातवीं जीत

63 मिनट में 18-21, 21-12, 21-16 से जीता मैच

एजेंसी ▶▶| ओडेन्से

दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधू ने खराब शुरुआत से उबरते हुए गुरुवार को यहां चीन की दुनिया की सातवें नंबर की खिलाड़ी हेन युई को हराकर डेनमार्क ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। पूर्व विश्व चैंपियन और अभी दुनिया की 18वें नंबर की खिलाड़ी सिंधू ने दूसरे दौर के मुकाबले में 63 मिनट में 18-21, 21-12, 21-16 से जीत दर्ज की।

मई में मलेशिया मास्टर्स के फाइनल में हेन को हराने के बाद शीर्ष 10 में शामिल खिलाड़ी के खिलाफ यह सिंधू की पहली जीत है। हेन के खिलाफ आठ मुकाबलों में यह सिंधू की सातवीं जीत है जबकि उन्हें एक बार हार का सामना करना पड़ा है। यहां 2015 में फाइनल में पहुंची सिंधू टूर्नामेंट में अब एकमात्र भारतीय खिलाड़ी बचीं हैं। वह अगले दौर में इंडोनेशिया की पेरिस ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता ग्रेगोरिया मारिस्का तुनजुंग और डेनमार्क की मिया ब्लिचफेल्ट के बीच होने वाले मैच की विजेता से भिड़ेंगी। तीन ओलंपिक में पहली बार पेरिस से खाली हाथ लौटीं सिंधू ने तुनजुंग के खिलाफ 12 मुकाबलों में 10 जीत दर्ज की हैं लेकिन इस साल दोनों खिलाड़ियों की अब तक भिड़ंत नहीं हुई है।

भारत ने सैफ महिला चैंपियनशिप के पहले मैच में पाक को 5-2 से हराया
काठमांडू। भारतीय महिला फुटबॉल टीम ने गुरुवार को यहां दशरथ स्टेडियम में ग्रुप ए के मैच में पाकिस्तान को 5-2 से हराकर सैफ महिला चैंपियनशिप 2024 में अपना अभियान शानदार तरीके से शुरू किया। पांच बार की चैंपियन भारतीय टीम पहले हाफ तक 4-1 से आगे थी। भारत ने तीन टीम के ग्रुप के शुरुआती मैच में जीत से तीन अंक हासिल किए। बांग्लादेश ग्रुप की तीसरी टीम है। भारतीय कप्तान आशालता देवी ने देश के लिए 100वां मैच खेलने की उपलब्धि हासिल की और स्ट्राइकर नगांगोम बाला देवी 50वां अंतरराष्ट्रीय गोल करने वाली देश की पहली महिला फुटबॉलर बनीं। भारत के लिए ग्रेस डांगमेई (दो गोल), मनीषा, बाला देवी और ज्योति चौहान ने गोल किए जबकि पाकिस्तान के लिए सुहा हिरानी और कायला मैरी सिद्दीकी ने गोल दागे। दोनों चिर प्रतिद्वंद्वी अब तक अंतरराष्ट्रीय मंच पर चार बार एक दूसरे से भिड़े हैं और सभी मुकाबलों में भारत विजेता रहा है।

इंग्लैंड फुटबाल टीम के नए कोच बने ट्यूशेल

लंदन। पेरिस सेंट जर्मेन, चेल्सी, बायर्न म्यूनिख जैसे क्लबों के कोच रह चुके जर्मनी के थॉमस ट्यूशेल इंग्लैंड फुटबाल टीम के नए मुख्य कोच होंगे। ट्यूशेल यूरोपियन चैंपियनशिप के फाइनल में हारने वाली इंग्लैंड टीम के कोच गारेथ साउथगेट की जगह लेंगे। वह स्वेन गोरान एरिक्सन और फैबियो कापेलो के बाद इंग्लैंड के तीसरे विदेशी कोच होंगे। उन्हें अमेरिका में 2026 में होने वाले फीफा विश्व कप तक मुख्य कोच की जिम्मेदारी दी गई है। ट्यूशेल ने कहा, मैं तुरंत ही समझ गया, यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। उनकी कोशिश रहेगी कि इंग्लैंड के खिलाड़ियों के जर्सी पर दूसरा स्टार (दूसरी बार विश्व विजेता बनना) लगे। इंग्लैंड ने एकमात्र बार 1966 में विश्व कप जीता है।

सदर्न सुपरस्टार्स बना लीजेंड्स लीग क्रिकेट चैंपियन
श्रीनगर। सदर्न सुपरस्टार्स गुरुवार को यहां कोणार्क सूर्यास ओडिशा को कड़े मुकाबले में सुपर ओवर में हराकर लीजेंड्स लीग क्रिकेट 2024 का चैंपियन बना। ओडिशा के टॉस जीतकर गेंदबाजी करने के फैसले के बाद सदर्न सुपरस्टार्स के लिए श्रीवत्स गोस्वामी और मार्टिन गुप्टिल ने पारी की शुरुआत की। गुप्टिल और हैमिल्टन मास्काद्जा ने दूसरे विकेट के लिए 76 रन की साझेदारी निभाई। मास्काद्जा और पवन नेगी ने तीसरे विकेट के लिए 68 रन की भागीदारी निभाई। मास्काद्जा ने 58 गेंद में 83 रन बनाए। नेगी ने 24 गेंद में 33 रन का योगदान दिया जिससे सदर्न सुपरस्टार्स ने 20 ओवर में छह विकेट पर 164 रन का स्कोर खड़ा किया।

जेएसडब्लू स्पोर्टस के निदेशक बने गांगुली

नई दिल्ली। भारत के सबसे सफल कप्तानों में शुमार सौरव गांगुली को जेएसडब्लू स्पोर्टस ने नया क्रिकेट निदेशक बनाया है। गांगुली आईपीएल में जेएसडब्लू की टीम दिल्ली कैपिटल्स से 2019 में सलाहकार के तौर पर जुड़े और कोच रिकी पोंटिंग के साथ काम किया। बाद में वह कैपिटल्स के क्रिकेट निदेशक बने। गांगुली ने अपनी नई भूमिका के बारे में कहा, 'मैं जेएसडब्लू समूह और जिंदल परिवार को व्यक्तिगत और पेशेवर तौर पर जानता हूं जिससे यह फैसला लेना आसान हो गया। मुझे खुशी है कि क्रिकेट से जुड़े उनके प्रोजेक्ट में मेरा अनुभव दे सकता हूं।'

सैफ चैंपियनशिप

भारत ने पाक को 5-2 से रौंदा आशालता ने खेला 100वां मैच

एजेंसी ▶▶| काठमांडू

भारतीय महिला सीनियर फुटबॉल टीम ने अपने सैफ महिला चैंपियनशिप 2024 अभियान की शानदार शुरुआत की, जिसमें उन्होंने दशरथ स्टेडियम में अपने चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 5-2 से हराया। संतोष कश्यप की अगुआई वाली टीम के लिए यह जीत एक शानदार शुरुआत है, क्योंकि उनका लक्ष्य क्षेत्रीय खिताब बरकरार रखना है। भारत ने पांचवें मिनट में बढ़त हासिल कर ली, जब ग्रेस डांगमेई ने बॉक्स के किनारे से दाएं पैर से शक्तिशाली शॉट लगाकर गोल किया। ब्लू टाइग्रेस ने 17वें मिनट में अपनी बढ़त दोगुनी कर ली, जब मनीषा कल्याण ने अनुभवी नगांगोम बाला देवी द्वारा फेंकी गई थ्रू बॉल का फायदा उठाते हुए शानदार गोल किया। इस मैच में भारत के लिए कई ऐतिहासिक क्षण भी देखने को मिले। कप्तान लोइटोंगबाम आशालता देवी ने अपना 100वां कैप अर्जित किया, जो इस दिग्गज डिफेंडर के लिए एक अविश्वसनीय उपलब्धि है। इसके अलावा, बाला देवी ने अपना 50वां अंतरराष्ट्रीय गोल किया, जो यह उपलब्धि हासिल करने वाली पहली भारतीय महिला फुटबॉलर बन गईं। ग्रेस डांगमेई, जिन्हें बाद में प्लेयर ऑफ़ द मैच चुना गया, ने दो गोल किए, जिससे उनकी शानदार फिनिशिंग क्षमता और फ्लैंक पर अथक ऊर्जा का प्रदर्शन हुआ। उनका पहला गोल, रंजना चानू के क्रॉस के बाद एक अच्छी तरह से लगाया गया शॉट था, जिसने मुकाबले की शुरुआत की।

हिरानी का गोल
भारत के दबदबे के बावजूद, पाकिस्तान हाफटाइम से ठीक पहले एक गोल करने में सफल रहा, जब सुहा हिरानी ने अतिरिक्त समय के दूसरे मिनट में एक पेनल्टी को गोल में बदला। दूसरे हाफ के शुरुआती मिनटों में, कायला मैरी सिद्दीकी ने डिफेंसिव चूक का फायदा उठाते हुए पाकिस्तान के लिए दूसरा गोल किया, जिससे अंतर 3-2 हो गया।

ज्योति ने दिलाई जीत
भारत ने तेजी से जवाब दिया, जिसमें 68वें मिनट में ज्योति चौहान ने स्थानापन्न गोल करके मैच को अपने नाम कर लिया। वह दलिमा छिब्बर के कॉर्नर को पूरा करने के लिए ऊपर उठीं और पाकिस्तानी गोलकीपर के पास से गेंद को हेडर से गोल में डालकर स्कोर 5-2 कर दिया। इस जीत ने अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में पाकिस्तान के खिलाफ भारत के शानदार रिकॉर्ड को आगे बढ़ाया, जिससे यह चार मैचों में चार जीत बन गई।

महिला टी-20 विश्व कप

ऑस्ट्रेलिया को आठ विकेट से हराकर दक्षिण अफ्रीका फाइनल में
दुबई। दक्षिण अफ्रीका ने कसी गेंदबाजी के बाद एनेके बोश (नाबाद 74 रन) के शानदार अर्धशतक की बदौलत बृहस्पतिवार को यहां छह बार की चैम्पियन ऑस्ट्रेलियाई टीम को आठ विकेट से हराकर उलटफेर करते हुए आईसीसी महिला टी20 विश्व कप के फाइनल में प्रवेश किया। दक्षिण अफ्रीका ने टी20 विश्व कप में पहली बार ऑस्ट्रेलिया को शिकस्त दी। दोनों टीमों के बीच 2023 सत्र का फाइनल खेला गया था जिसमें आस्ट्रेलिया ने 19 रन से जीत दर्ज की थी। अब रविवार को दक्षिण अफ्रीका का सामना न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज के बीच होने वाले दूसरे सेमीफाइनल की विजेता से होगा। दक्षिण अफ्रीका ने 'प्लेयर ऑफ द मैच' रहीं बोश की आठ चौके और एक छक्के जड़ित 48 गेंद की नाबाद पारी की मदद से 17.2 ओवर में दो विकेट पर 135 रन बनाकर आस्ट्रेलियाई टीम का आठवीं बार फाइनल में प्रवेश करने का सपना तोड़ दिया। इससे पहले बल्लेबाजी का न्यौता मिलने के बाद धीमी शुरूआत करने वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम पांच विकेट पर 134 रन ही बना सकी। ऑस्ट्रेलिया ने 2009 से शुरू हुए इस टूर्नामेंट में सभी नौ सत्र में सेमीफाइनल खेले हैं। दक्षिण अफ्रीका की जीत में कप्तान लौरा वोलवार्ट (42 रन) और बोश के बीच दूसरे विकेट के लिए बनी 65 गेंद में 96 रन की आक्रामक भागीदारी ने अहम भूमिका निभाई। वोलवार्ट ने 37 गेंद में तीन चौके और एक छक्का लगाया जबकि तजमिन ब्रिट्स ने एक चौके और एक छक्के कीम दद से 15 गेंद में 15 रन बनाये।

विश्व कप फाइनल में विवान को रजत, नरुका को कांस्य पदक

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

अनंतजीत सिंह नरुका के पुरुष स्कीट में कांस्य पदक के बाद विवान कपूर ने पुरुष ट्रैप स्पर्धा में रजत पदक जीता जिससे गुरुवार को यहां आईएसएसएफ विश्व कप निशानेबाजी फाइनल में भारत के पदकों की संख्या चार हो गई। विवान ने फाइनल में 44 का स्कोर बनाया और वह चीन के स्वर्ण पदक विजेता यिंग की से पीछे रहे। तुर्की के टोल्गा एन टुंसर ने 35 के स्कोर से कांस्य पदक जीता।

इससे पहले राजस्थान के 26 वर्षीय नरुका ने छह निशानेबाजों के फाइनल में 43 के स्कोर के साथ तीसरा स्थान हासिल किया। इटली के तामारो कासांद्रो को स्वर्ण और गैब्रियेले रोसेत्ती को रजत पदक मिला जिन्होंने क्रमशः 57 और 56 स्कोर किया। नरूका ने क्वालीफिकेशन दौर में 125 में से 121 स्कोर किया था। भारत के लिए सोनम मस्कर ने महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल में रजत और अखिल श्योराण ने पुरुषों की 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशंस में कांस्य पदक जीता है।

भारत के लिए चार टेस्ट और 40 वनडे खेल चुके हैं बदानी

बदानी बने दिल्ली के मुख्य कोच, राव निदेशक

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

दिल्ली कैपिटल्स ने गुरुवार को 2025 इंडियन प्रीमियर लीग सत्र से पहले अपने नए कोचिंग स्टाफ की नियुक्ति की जिसमें पूर्व भारतीय क्रिकेटर हेमांग बदानी को मुख्य कोच और वेणुगोपाल राव को क्रिकेट निदेशक बनाया गया। भारत के लिए चार टेस्ट और 40 वनडे खेल चुके 47 वर्षीय बदानी को विभिन्न क्रिकेट लीग में कोचिंग का अनुभव है। 2021 से 2023 तक उन्होंने सनराइजर्स हैदराबाद के साथ क्षेत्ररक्षण कोच और फिर बल्लेबाजी कोच के तौर पर काम किया।

लंका प्रीमियर लीग में उन्होंने जाफना किंग्स को लगातार दो खिताब दिलाए और शुरुआती एसए20 में वह खिताब जीतने वाली सनराइजर्स ईस्टर्न केप के बल्लेबाजी कोच थे। हाल में वह दुबई कैपिटल्स के मुख्य कोच थे जो इस साल के आईएलटी20 फाइनल में पहुंची थी। बदानी ने कहा, 'दिल्ली कैपिटल्स में शामिल होना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है और मुझ पर भरोसा करने के लिए टीम के मालिकों का आभारी हूं।'

राव को 16 वनडे खेलने का अनुभव
भारत के लिए 16 वनडे खेलने वाले राव 2009 में आईपीएल जीतने वाली डेक्कन चार्जर्स टीम का हिस्सा थे। वह दिल्ली डेयरडेविल्स के लिए तीन आईपीएल सत्र में भी खेले और दुबई कैपिटल्स से जुड़े रहे जिसमें उन्होंने शुरुआती सत्र में मेंटोर के तौर में और बाद में बतौर क्रिकेट निदेशक काम किया। राव ने कहा, 'फ्रेंचाइजी के साथ मेरा जुड़ाव लंबे समय से है और मैं इस भूमिका की पेशकश करने के लिए टीम के मालिकों द्वारा दिखाए भरोसे के लिए आभारी हूं।' दिल्ली कैपिटल्स 2021 चरण में उपविजेता रही लेकिन बाद के तीन सत्र में शीर्ष चार में पहुंचने के लिए संघर्ष करती रही।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक संपादक उपेन्द्रसिंह राठौड़, अम्बर ऑफसेट प्रा.लिडीएल टॉवर, उए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र जेएलएन मार्ग जयपुर से मुद्रित एवं भू-तल ऑरबिट मॉल, सिविल लाइंस, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित, 99280-96524, पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार, (सहसंपादक) 8696750000, पंकज गर्ग (प्रबंध संपादक) 01482-455184, 9214417111